Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 43

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

24 सफर 1440 हिजरी कमरी 24 इख़ा 1397 हिजरी शमसी 24 अक्तूबर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा ने इस ज़माना तरक़्क़ी में इस्लाम को बिना सहायता के नहीं छोड़ा बल्कि उसने इस्लाम की हिफ़ाज़त की और अपने सच्चे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वादों को सच्चा साबित किया और इस की मुबारक पेशनगोइयों की हक़ीक़त खोल दी और इस सदी में एक आदमी पैदा कर दिया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मौजूदा ज़माना की हालत और मुस्लेह (सुधारक) की ज़रूरत

और ऐसा ही इस ज़माना में कि जिस में हम रहते हैं ईमानी ताक़तें मुर्दा हो कर दुराचार तथा कदाचार ने उनकी जगह ले ली है। लोगों के मामले एक तरफ़ इबादतें दूसरी तरफ़, अत: हर बात में बिगाड़ हो गया है। सिर्फ यह आफ़त ही अगर होती तो कुछ नुकसान और अफसोस का स्थान ना था। लेकिन इन सारी बातों के इलावा सबसे बड़ी आफ़त जिसका मुझे कई बार ज़िक्र करना पड़ा है और जिसको हर इस्लाम का भला चाहने वाला दिल महसूस कर चुका है या कर सकता है वह ज़हरीला असर है जो आजकल की तिब्बी तबाबत और हैयत और झूठे फ़लसफ़ा के कारण इस्लाम और इस्लाम वालों पर आ रही है। उल्मा तो इस तरफ़ ध्यान नहीं करते। उनको आपस की जंगों और अंदरूनी झगड़ों और एक दूसरे को काफ़िर ठहराने से फ़ुर्सत मिले तो इधर ध्यान करें। ज़ाहिद अपनी गोशा नशीनी में बैठ कर अगर दुआओं से काम लेते तो भी कुछ चिन्ह पैदा होते मगर वह पीर परस्ती और जवाज़ गाने बजाने की महिफलों की बहसों में पड़े हुए हैं। वास्तविक सूफ़ी इज़म की जगह अब कुछ रस्मों ने ले ली जिनका क़ुरआन और सुन्नत से पता नहीं चलता। अत: हर तरफ़ से इस्लाम जाहिलों तथा बेफकूफों की तलवार की मार सह रहा है। इस वक़्त में कि वे ज़रूरतें जो किसी मुस्लेह और रीफ़ारमर के आने के लिए अनिवार्य हैं। पूरे इंतिहाई चर्म तक पहुंच चुकी हैं। हर एक शख़्स बजाए ख़ुद एक नया मज़हब रखता है। इन सारी बातों और हालात पर क़ियास कर के इस्लाम की उम्र ख़ात्मा के क़रीब नज़र आती थी। डाक्टर और तबीब जब किसी हैज़ा के मरीज़ का शरीर बर्फ़ जैसा ठण्डा या उसे सरसाम में पीड़ित देखते हैं तो उसे लाइलाज बता कर खिसक आते हैं और ख़राब हालात देखकर डाक्टर हाज़िक़ भी निराशा और असमर्थता ज़ाहिर कर देता है। अब इस वक़्त इस्लाम की हालत ,कुछ शक नहीं कि इस की इंतिहाई निराशा तक पहुंच गई थी लेकिन अगर वह भी इन्सान के अपने ख़्यालों का नतीजा या अपनी कोशिशों का फल होता तो उन कष्टों और मुसीबतों के दौरान में कि हर तरफ़ से इस पर मार पड़ती है और इस की अपनी अंदरूनी हालत मुनाफकते के कारण आपस में कमज़ोर होती गई है। ऐसी हालत में कम से कम इस्लाम का क़ायम रहना जिसके समाप्त करने के लिए मुख़ालिफ़ों ने नाख़ुनों तक ज़ोर लगाया और लगा रहे हैं। बहुत मुश्किल हो जाता। कोई साल नहीं जाता जबकि कोई नई सूरत इस्लाम पर हमला करने की नहीं तराशी जाती। अगर कोई ईजाद या आविष्कार बनाया जाती है। इस के लिए उसूल को समक्ष रखकर इस्लाम पर हमला कर दिया जाता है।

आजकल की तरक़्क़ी भी इस्लाम का एक मोजिज़ा है

अत: ऐसे फ़ित्ने के वक़्त में क़रीब था कि दुश्मन इकट्ठे हो कर एक बार ही मुसलमानों को हरा देते लेकिन अल्लाह तआला के ज़बरदस्त हाथ ने इस्लाम को सँभाले रखा यह भी एक दलील है इस्लाम की सदाक़त की। आजकल की तरक़्क़ी भी इस्लाम का एक चमत्कार है। अत: देखो कि विरोधियों ने अपनी सारी ताक़तें और शक्तियां यहां तक कि जान और माल तक भी इस्लाम के समाप्त करने में खर्च कर दिया मगर अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल्-हिज्र :10) अर्थात ख़ुदा आप ही इन फ़ितरत के नक्शों को याद दिलाने वाला है और ख़तरा के वक़्त उस को बचा लेगा। इस्लाम की किश्ती ख़तरा में जा पड़ी थी। पादरियों का हमला जिन्होंने करोड़ों रुपया ख़र्च कर के और तरह तरह के लाभ और वादा यहां तक कि शर्मनाक नफ़सानी आन्नदों तक दिखा कर भी लोगों को इस्लाम से बदज़न करने की कोशिश की और दूसरी तरफ़ इस्लामी अक़ीदों को बदनाम करते हैं। देखो! बारिश के रुकने के कारण से इस्तिस्क़ा की नमाज़ पढ़ी जाती है। अगर मशीन से बारिश बरसाने में कामयाबी हो जाए। जैसा कि आजकल कुछ लोग अमरीका इत्यादि में कोशिशें करते हैं तो इस तरह पर एक रुकन टूट जाएगा। अत: मैं कहाँ तक वर्णन करूँ। हर तरफ़ से इस्लाम पर हमले हो रहे हैं और इस को बदनाम करने की कोशिश, हाँ अनथक कोशिश की जाती है मगर उन लोगों के मन्सूबे और हथकंडे क्या कर सकते हैं। ख़ुदा उस को ख़ुद उन षडयन्त्रों से बचाना चाहता है और इस ज़माना तरक़्क़ी में इस्लाम को बिना सहायता के नहीं छोड़ा बल्कि उसने इस्लाम की हिफ़ाज़त की और अपने सच्चे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वादों को सच्चा साबित किया और इस की मुबारक पेशनगोइयों की हक़ीक़त खोल दी और इस सदी में एक आदमी पैदा कर दिया। मैं बार-बार कहता हूँ कि वह वही है जो तुम्हारे मध्य बोल रहा है। वह सदाक़त की रूह इस्लाम में फूंक देगा। वह वही है जो गुम हुई सदाक़तों को आसमानों से लाता है और लोगों तक पहुँचाता है। वे बदज़नियों और ईमानी कमज़ोरीयों को दूर करना चाहता है।

☆ ☆ ☆

जलसा सालाना कादियान के बारे में एलान

दिसम्बर 2019 ई में आयोजित होने वाले जलसा सालाना कादियान के बारे में अख़बार बदर कादियान में ऐलान होता रहा है कि यह जलसा 125वां जलसा सालाना है। इस तारीख़ी जलसा के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कुछ विशेष प्रोग्रामों की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई है जिस की सूचना सर्कुलर के द्वारा जमाअतों को दी गई है। इसी दौरान' तारीख़ अहमदियत कादियान विभाग''की तहक़ीक़ की रोशनी में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल की सेवा में यह सूचना दी गई कि 2019 ई में आयोजित होने वाला जलसा सालाना 125 वां जलसा सालाना नहीं बल्कि126 वां जलसा सालाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त करते हुए इस की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई और प्रोग्रामों को भी जारी रखने का आदेश फ़रमाया है। बदर के पाठक सूचित रहें।

(नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-12)

अपनी ज़िन्दगियों को इस्लामी शिक्षा के अनुसार ढालें

आपको अपनी हर जमाअत में साप्ताहिक जाने की कोशिश करनी चाहिए

नौजवानों को मस्जिदों से attach करें ताकि उनको इस्लाम की सही शिक्षा का पता लगे

लोगों को ख़ुत्बों के साथ, एम.टी.ए के साथ attach करें,ओहदेदारान के पीछे पढ़कर उन को भी एम.टी.ए और ख़ुत्बों से attach करें

घरों में ऐम.टी.ए पर जुम्अः का ख़ुत्बा ज़रूर टीवी पर लगाया करें, इस तरफ़ ध्यान दिलाने की ज़रूरत है

अपनी ज़िन्दगियों को इस्लामी शिक्षा के अनुसार ढालें और सारी जमाअत को तब्लीग़ करने के लिए हरकत में लाएं

अगर लड़कियों को शिक्षा दिलवाकर उन से नौकरियां करवानी हैं, कमाई करवानी है और इस वजह से उन की शादी जल्दी ना होतो मैं ऐसी शिक्षा के ख़िलाफ़ हूँ।

अगर शादी पर कोई ग़ैर इस्लामी रस्में , बातें देखें तो ध्यान दिलाएँ और बंद करवाएं, इस्लामी रिवायतों और शिक्षाओं के अनुसार शादियां होनी चाहिऐं

ध्यान दिलाने पर अगर फिर भी सुधार नहीं करते तो फिर उठ कर आ जा या करें, वहां नहीं बैठना, अगर बैठे रहेंगे तो फिर आपको सज़ा होगी

अपनी जमाअत के सामने रोल मॉडल बनना है, इबादतें हैं, अख़लाक़ हैं, बातचीत है, धार्मिक इल्म है, जनरल नॉलिज है, देश के लिहाज़ से भी मामलों का इल्म होना चाहिए

मुबल्लग़ीन सिलसिला अमरीका की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की मुबल्लग़ीन को नेक नसीहतें।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मुबल्लग़ीन सिलसिला अमरीका की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात (शेष.....)

हुज़ूर अनवर ने मुबल्लग़ीन को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि नौजवानों को मस्जिदों से attach करें ताकि उनको इस्लाम की सही शिक्षा का पता लगे।

एक मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि वह मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें जमा करके पढ़ाते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि लोग यह ना समझें कि नमाज़ें तीन होती हैं। फ़रमाया आप मग़रिब अपने वक़्त पर अदा किया करें और जब लोग बाद में इशा के वक़्त आएं तो उनको कहें कि आप मग़रिब की नमाज़ पढ़ लें। फिर आप इशा की नमाज़ पढ़ाऐं ताकि लोगों को इल्म हो कि मुबल्लिग़ अपने वक़्त पर नमाज़ पढ़ चुका है और नमाज़ें पाँच अपने अपने वक़्त पर होती हैं। जिन्होंने नहीं पढ़ी, उनको बता दो कि अलग अपनी नमाज़ पढ़ लें। फिर उस के बाद अस्र हो या इशा की नमाज़ हो, यह इसलिए ज़रूरी है कि नौजवान बच्चों को एहसास हो कि नमाज़ें पाँच हैं, तीन नहीं हैं। अगर बच्चे, नौजवान तीन नमाज़ें समझते हैं तो यह उनकी ग़लत तर्बीयत हो रही है। बड़ों को कहें कि तुम अपने नमूने दिखाओ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर ज़्यादा लोग इशा के लिए आ जाऐं, जिन्होंने अभी मग़रिब की नमाज़ अदा करनी है तो आप उनमें से एक इमाम मुक़र्रर करके उनको कह दें कि वह किसी दूसरी जगह एक तरफ़ खड़े हो कर जमाअत के साथ नमाज़ अदा कर लें। क्या पता इसी तरह थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: लोगों को ख़ुत्बों के साथ MTA के साथ attach करें। ओहदेदारान के पीछे पड़ कर उनको भी MTA और ख़ुत्बों से attach करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जो जमाअत के लोगों और ओहदेदार मस्जिद के क़रीब रहते हैं, मस्जिद से बहुत ज़्यादा दूरी नहीं है उनको कहें कि सुबह अपने कामों पर जाते हुए नमाज़ फ़ज्र पढ़ कर जाया करें। घरों से काम पर निकलते हैं तो नमाज़ फ़ज्र मस्जिद में जमाअत के साथ पढ़ कर जाया करें। सर्दियों में तो यह मुम्किन है।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि जहां-जहां नमाज़ सैंटर बनाए हुए हैं वहां किसी को नियमित इमाम मुक़र्रर करना चाहिए। वहां आने वाले लोगों को पता हो कि अमुक आदमी इमाम मुक़र्रर है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जहां-जहां लोग मस्जिद से दूर रहते हैं उनको नमाज़ सैंटर बना कर किसी एक घर में या किसी एक जगह जमा कर लें।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि आपने घरों में जो भी नमाज़ सैंटर बनाए हैं वहां सप्ताह में सात दिन पाँच वक़्त- नमाज़ होनी चाहिए और कम से कम सात दिन मग़रिब तथा इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमायाः यहां MTA देखने का रिवाज कम है। मैंने कहा था कि घरों में MTA पर जुम्अः का ख़ुत्बा ज़रूर tv पर लगाया करें। घरों में चलते फिरते कानों में आवाज़ पड़ जाती है। इस तरफ़ ध्यान दिलाने की ज़रूरत है। कानों में आवाज़ पड़ जाए तो इस का भी असर होता है। कम से कम एक घंटा दैनिक MTA देखने की कोशिश करनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: लोगों को नमाज़ों से जोड़ें। MTA के द्वारा ख़िलाफ़त से जोड़ें तो बहुत सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। इसी तरह बहुत सारी समस्याएं सामने भी आ जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर ने मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब से तब्लीग़ी प्लान के बारे में पूछा। इस पर मुबल्लिग़ इंचार्ज ने बताया कि दाईन इल्लाह की संख्या बढ़ाने का प्लान है। इस बारे में से कोशिश कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने पूछने फ़रमाया कि जमाअतें मुरब्बियों से मदद लेती हैं या आपने अपने प्रोग्राम बनाए हुए हैं? मुरब्बियों की सेक्रेटरी तब्लीग़ और सेक्रेटरी तर्बीयत से कोआरडीनीशन है? इत्फ़ाल इत्यादि के प्रोग्रामों, कक्षाओं के लिए आपकी मदद ली जाती है? लजना के साथ कोई प्रोग्राम हुए हैं?

इस पर मुबल्लग़ीन ने निवेदन किया कि लजना के साथ सवाल तथा जवाब के प्रोग्राम आयोजित हुए हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि लजना के साथ जो भी प्रोग्राम है, वह पर्दा के पीछे रह कर करना है।

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मुसैलमा कज़्ज़ाब की तरफ़ से बग़ावत का ऐलान ही दरअसल जंग की असल वजह थी।

"अगर तुम में से कोई आए और इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो उसे चाहिए कि वह दो रकअत नमाज़ पढ़े और वह दोनों रकअतें हल्की हों।" (अलहदीस)

"अल्लाह की कसम मैंने कभी ऐसा क़ैदी नहीं देखा जो ख़ुबैब से बेहतर हो।"

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी हज़रत यज़ीद बिन रुकेश, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह, हज़रत अमरो बिन मअबद, हज़रत नोमान बिन मालिक और हज़रत ख़ुबैब बिन अदी अन्सारी रज़ी अल्लाह अन्हुम की मुबारक सीरत का दिल-नशीं वर्णन।

झूटे नबुव्वत का दावा करने वाले मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ लड़े जाने वाले फ़ैसला करने वाली जंग यमामा, जंग बदर के शीघ्र बाद होने वाली घटना रजीअ और हज़रत ख़ुबैब रज़ी अल्लाह अन्हो की शहादत का विस्तार से वर्णन।

अफ़्रीक़ा के विभिन्न देशों में मुबल्लिग़ सिलसिला और इंचार्ज प्रैस इसी तरह एक लंबा समय बतौर मैनेजर नुसरत आर्ट प्रैस रब्वह ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाने वाले सिलसिला के मुरब्बी मुहतरम सफ़ीउर्र-रहमान साहिब ख़ुर्शीद की वफ़ात पर मरहूम का ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जुम्अः के बाद नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

तारीख़ अहमदियत विभाग की वेब साईट का आरम्भ।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 सितम्बर 2019 ई. स्थान - कन्ट्री मारकेट बोर्डन, हेम्पशायर (वगे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के ज़िक्र में से आज जिनके ज़िक्र से शुरू करूँगा वे हैं हज़रत यज़ीद बिन रुकेश रज़ि। हज़रत यज़ीद रज़ि का सम्बन्ध क़बीला क़ुरैश के ख़ानदान बनू असद बिन ख़ुज़ैमा से था और हज़रत यज़ीद रज़ि बनू अब्द शमस के हलीफ़ थे।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 460 बाब मन हज़र बदरन मिनल मुस्लिमीन, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001ई)

कुछ ने उनका नाम अर्बद भी बयान किया है लेकिन ये ठीक नहीं।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा ले इब्न असीर भाग 5 पृष्ठ 452 यज़ीद बिन रुकेश ,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

हज़रत यज़ीद रज़ि के पिता का नाम रुकेश बिन राबा और उनकी कुनिय्यत अबू ख़ालिद थी। हज़रत यज़ीद रज़ि जंग बदर, उहद और ख़ंदक़ सहित अन्य सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। हज़रत यज़ीद रज़ि ने जंग बदर में तय क़बीला के एक आदमी अमर बिन सुफ़ियान को क़त्ल किया था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 50 यज़ीद बिन रुकेश, दारा अहया अत्तुरास अलअरबी 1996 ई)(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 480 बाब मन क़त्ल बे बदर मिनल मुशरक़ीन, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001ई)

हज़रत यज़ीद रज़ि के एक भाई का नाम हज़रत सईद बिन रुकेश रज़ि था जिन्हों ने अपने घर वालों के साथ मक्का से मदीना की तरफ़ हिजरत की, जिनकी गिनती अव्वलीन मुहाजिरीन में होती है।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा ले इब्न असीर भाग 2 पृष्ठ 475 सईद बिन रुकेश, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

हज़रत यज़ीद रज़ि के एक भाई का नाम हज़रत अबदुर्रहमान बिन रुकेश रज़ि था जो जंग उहद में शरीक हुए थे

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 4 पृष्ठ 370 यज़ीद बिन रुकेश, दारा अहया अत्तुरास अलअरबी 1996 ई)

हज़रत यज़ीद रज़ि की एक बहन का नाम हज़रत आमना बिंत रुकेश रज़ि था जिन्होंने शुरू में ही मक्का में इस्लाम क़बूल कर लिया था और उन्होंने भी अपने परिवार के साथ मदीने की तरफ़ हिजरत की थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 8 पृष्ठ 371 आमना बिन्त रुकेश, दारे अहया अत्तुरास अलअरबी 1996 ई)

हज़रत यज़ीद रज़ि जंग यमामा के दिन 12 हिज्री में शहीद हुए थे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 50 यज़ीद बिन रुकेश, दारा अहया अत्तुरास अलअरबी 1996 ई)

इस जंग की कुछ तफ़सील इस तरह से है, एक बार पहले भी कुछ मैं थोड़ा सा सारांक्ष वर्णन कर चुका हूँ

जंग यमामा हज़रत अबू बकर रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में 11हिज्री में हुई थी। कुछ इतिहासकारों के अनुसार 12 हिज्री में हुई थी। यह जंग मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ यमामा के स्थान पर लड़ी गई थी। हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत अकरमह रज़ि बिन अबुजहल की सरकर्दगी में एक लश्कर मुसैलमा के मुक़ाबला के लिए भेजा। उनके पीछे उनकी मदद के लिए हज़रत शुरह बिन हसनह रज़ि की सरकर्दगी में एक लश्कर रवाना किया। हज़रत अकरमह रज़ि ने हज़रत शुरह के पहुंचने से पहले ही मुसैलमा से लड़ाई शुरू कर दी ताकि कामयाबी का सहरा उनके सिर हो लेकिन मुसैलमा से उन्हें शिकस्त हुई। इस घटना की सूचना जब हज़रत शुरह को मिली तो वह रास्ता में रुक गए। हज़रत अकरमह रज़ि ने अपनी सारी बात हज़रत अबू बकर रज़ि को लिखी तो हज़रत अबू बकर रज़ि ने उन्हें लिखा कि ना तुम मुझे इस हालत में मिलो और ना मैं तुम्हें देखूं और ना मदीना वापस आओ जिस से लोगों में बुज़दिली पैदा हो बल्कि अपने लश्कर को लेकर अहल उम्मान और मुहरा के बाग़ियों के साथ जा कर लड़ाई करो। इस के बाद यमन और हज़रमूत में बाग़ियों के साथ जा कर लड़ो। हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत शुरह को लिखा कि तुम हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि के आने तक अपनी जगह ठहरे रहो। हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत ख़ालिद रज़ि को मुसैलमा कज़्ज़ाब के मुक़ाबला के लिए रवाना किया और उनके साथ मुहाजरीन और अन्सार की एक बड़ी जमाअत रवाना फ़रमाई। अन्सार की जमाअत के सरदार हज़रत साबित बिन कैस रज़ि और मुहाजिरीन के सरदार हज़रत अब्बू हुज़ैफ़ा और हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि थे। हज़रत शुरह ने हज़रत ख़ालिद रज़ि के आने से पहले मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जंग शुरू कर दी और हार

गए। हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत ख़ालिद रज़ि के लिए हज़रत सलीत रज़ि की क़ियादत में और अधिक सहायता रवाना कर दी ताकि पीछे से कोई उन पर हमला ना कर सके। हज़रत अबू बकर रज़ि फ़रमाया करते थे कि मैं नहीं चाहता कि मैं बदरी सहाबा को इस्तिमाल करूँ। मैं उन्हें इस हाल में छोड़ना पसंद करता हूँ कि वे अपने सालिह कर्मों के साथ अल्लाह से मुलाक़ात करें।अल्लाह तआला उनकी बरकत से और नेक लोगों की बरकत से इस से ज़्यादा अफ़ज़ल तौर पर मसीबतों को दूर कर देता है बजाय उस के कि उनसे अमली तौर पर मदद ली जाए लेकिन बहरहाल मजबूरियों की वजह से शामिल भी हुए थे लेकिन हज़रत उमर रज़ि की राय उस के विपरीत थी वह बदरी सहाबा रज़ि को लश्कर इत्यादि में इस्तिमाल फ़र्मा लिया करते थे।

बहरहाल इस जंग में मुस्लमानों के लश्कर की संख्या तेरह हज़ार थी जबकि मुसैलमा के लश्कर की संख्या चालीस हज़ार वर्णन की जाती है। मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ एक आदमी नहअरुर्रिजाल बिन उनफुवह था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, वहां क़ुरआन करीम और धर्म के मसले सीखे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे अहल यमामा की की तरफ़ मुअल्लिम बना कर भेजा ताकि वह मुसैलमा कज़्ज़ाब के दावा नबुव्वत का रद करे। वहां जा कर यह आदमी मुर्तद हो गया और इस बात की शहादत दी कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बयान करते हुए सुना है, झूटी गवाही एक दे दी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मुसैलमा को मेरे साथ नबुव्वत में नऊज़ बिल्लाह शरीक कर दिया गया है। बहरहाल जब यह मुर्तद होते हैं पहले भी और आज भी इसी तरह ग़लत इल्ज़ाम और झूटी बातें मंसूब करना ऐसे लोगों का काम होता है। बहरहाल मुसैलमा के क़बीला बनू हनीफा पर इस आदमी के इर्तिदाद का मुसैलमा के दावा की निसबत से कहीं ज़्यादा बुरा असर पड़ा क्योंकि यह तर्बीयत के लिए भेजा गया था और इस के अधीन भी लोग थे। जब उसने यह बातें कहीं, मुसैलमा के दावा नबुव्वत का तो इतना असर नहीं था लेकिन इस की बातों से लोगों ने असर लेना शुरू कर दिया। इस की गवाही को सबने स्वीकार किया और नतीजा यह कि मुसैलमा की इताअत कर ली और इस से कहा कि तुम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़त लिखो। अगर वह तुम्हारी बात ना मानें तो हम फिर उस के मुक़ाबला में तुम्हारी मदद करेंगे। उनकी तरफ़ से यह बग़ावत का ऐलान ही दरअसल जंग का असल कारण था।

जब मुसैलमा को मालूम हुआ कि हज़रत ख़ालिद रज़ि क़रीब आ गए हैं, इस जंग की जो घटना वर्णन की जा रही है, हज़रत ख़ालिद रज़ि को भेजने की , हज़रत अबू बकर रज़ि ने जो भेजा था तो अब आगे यूं वर्णन मिलता है कि हज़रत ख़ालिद रज़ि के अनुसार जब मालूम हुआ कि क़रीब आ गए हैं तो उसने उक्रा स्थान पर अपना पड़ाव डाला और लोगों को अपनी मदद के लिए बुलाया। लोग बहुत बड़ी संख्या में इस की तरफ़ आने लगे। इसी दौरान मुज्जाअह बिन मुरारा एक गिरोह के साथ बाहर निकला तो मुस्लमानों ने उसे और इस के साथियों को पकड़ लिया। हज़रत ख़ालिद रज़ि ने इस के साथियों को क़त्ल कर दिया और मुज्जाअह को ज़िन्दा रखा। यह जंग के लिए निकले थे क्योंकि क़बीला बनू हनीफा में इस की बहुत इज़्ज़त होती थी। उनके लीडर को नहीं मारा, क़ैदी बना लिया। मुसैलमा के बेटे शुरह ने बनू हनीफा को भड़काते हुए कहा कि आज बहादुरी दिखाने का दिन है। जब उस को पकड़ा गया तो मुसैलमा के बेटे ने उनके इस क़बीले को भड़काया कि अगर आज तुमने शिकस्त खाई तो तुम्हारी औरतें लौंडियां बना ली जाएँगी और बग़ैर निकाह के उनसे लाभ उठाया जाएगा अत: आज तुम अपनी इज़्ज़त और सम्मान की हिफ़ाज़त के लिए पूरी बहादुरी दिखाओ और अपनी औरतों की हिफ़ाज़त करो। बहरहाल जंग शुरू हुई। मुहाजिरीन का झंडा हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ह रज़ि के पास था जबकि इस से पहले वह अब्दुल्लाह बिन हफ़स रज़ि के पास था लेकिन वह शहीद हो गए थे और अन्सार का झंडा हज़रत साबित बिन कैस रज़ि के पास था। घमसान की जंग हुई और वह जंग ऐसी थी कि मुस्लमानों को इस से पहले ऐसी जंग का कभी सामना नहीं करना पड़ा था। इस जंग में मुस्लमान हार गए और बनू हनीफा के लोग मुज्जाअह को छुड़ाने के लिए आगे बढ़े, जिसको हज़रत ख़ालिद रज़ि ने क़ैदी बनाया था और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि के ख़ेमा का क़सद क्या, वहां गए इस तरफ़ बढ़े। इस वक़्त हज़रत ख़ालिद रज़ि की बीवी ख़ेमे में थी। इन लोगों ने हज़रत ख़ालिद रज़ि की बीवी को क़त्ल करना चाहा तो मुज्जाअह ने कहा कि मैंने उसे पनाह दी है, उन्हें क़त्ल करने से रोक दिया। मुज्जाअह ने उन्हें मर्दों पर हमला करने का कहा इस पर वे ख़ेमे को काट कर चले गए। जंग फिर सख़्त हो गई और क़बीला बनू हनीफा सब मिलकर सख़्त हमला करने लगे। इस रोज़ कभी मुस्लमानों का पलड़ा भारी होता कभी काफ़िरों का। इस जंग में हज़रत सालमा रज़ि, हज़रत अबू हुज़ैफ़ह रज़ि, हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि जैसे सम्मान्नीय सहाबा किराम शहीद हुए।

हज़रत ख़ालिद रज़ि ने जब मुस्लमानों की यह हालत देखी तो उन्होंने हर क़बीला को अलग अलग होने का हुक्म दिया ताकि मसीबतों का अंदाज़ा लगाया जा सके और मालूम हो सके कि कहाँ से मुस्लमानों पर हमला किया जा रहा है। इसी तरह जंग में सफ़ों को अलग अलग दरुस्त किया तो मुस्लमान एक दूसरे से कहने लगे कि आज के दिन हम को फ़रार करने में शर्म महसूस हो रही है यानी बड़ी शर्म योग्य बात है जो हमारा हाल हो रहा है। मुस्लमानों के लिए इस से ज़्यादा कोई मुसीबत का दिन ना था। मुसैलमा अभी तक अपनी जगह पर क़ायम था और कुफ़्फ़ार की तरफ़ से जंग का मर्कज़ था। हज़रत ख़ालिद रज़ि ने यह पता कर लिया यह उनको एहसास हो गया कि जब तक उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा तब तक जंग बंद नहीं होगी। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि आगे निकले और उन्होंने आपस में मुकाबला की मांग और जंगी शआर का नारा लगाया जो उस वक़्त यह मुहम्मदाह था। जो भी मैदान में आया तो वह क़त्ल हुआ। इस पर मुस्लमान हरकत में आए । फिर हज़रत ख़ालिद ने मुसैलमा को पुकारा। वह सामने नहीं आया और भाग गया और अपने साथियों सहित ही अपने बाग़ में पनाह लेने पर मजबूर हो गया और बाग़ का दरवाज़ा बंद कर दिया। मुस्लमानों ने इस बाग़ का घेराव कर लिया। हज़रत बराअ बिन मालिक रज़ि ने कहा कि मुसलमानो! तुम मुझे दीवार पर चढ़ा कर अंदर उतार दो। बड़े जुर्रत वाले, बहादुर आदमी थे। मुस्लमानों ने कहा कि हम ऐसा नहीं कर सकते मगर हज़रत बराअ रज़ि नहीं माने और इसरार किया कि आप लोग मुझे किसी तरह इस बाग़ के अंदर डाल दें। अत: मुस्लमानों ने उन्हें बाग़ की दीवार पर चढ़ाया और वहां से वह दुश्मनों में क़ूद पड़े और बाग़ के अंदर चले गए। अन्दर जा के उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया। मुस्लमान बाग़ के अंदर दाख़िल हुए। फिर घमसान की जंग हुई। वहशी ने मुसैलमा को क़त्ल किया। यह आदमी वहशी वही है जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा हज़रत हमज़ह रज़ि को शहीद किया था। बहरहाल एक रिवायत के अनुसार वहशी और एक अन्सारी ने मुशतर्का तौर पर मुसैलमा को क़त्ल किया था। वहशी ने अपना भाला मुसैलमा की तरफ़ फेंका और अन्सारी ने अपनी तलवार से इस पर वार किया। दोनों ने एक ही वक़्त में वार किया था इसलिए बाद में वहशी कहा करते थे कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि हम में से किस के वार ने इस का काम अन्य किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि बयान करते हैं कि एक आदमी ने चीख़ कर यह ऐलान किया कि मुसैलमा को काले ग़ुलाम ने क़त्ल कर दिया है। इसलिए यह भी ज़्यादा संका है कि वहशी ने क़त्ल किया। हज़रत ख़ालिद रज़ि ने मुज्जाअह के द्वारा मुसैलमा की लाश का पता करवाया।

मुज्जाअह ने हज़रत ख़ालिद रज़ि से कहा कि मुस्लमानों के मुक़ाबला में आने वाले लोग जलदी करने वाले और ना तजुर्बा कार थे। अन्य क़िले जो हैं वे बड़े तजरबाकार फ़ौजियों से भरे हुए हैं। उनकी तरफ़ से मेरे से सुलह कर लें अगर अब जंग की तो मुस्लमानों का और ज़्यादा नुक़्सान होगा। बड़ी चाल चली उसने। हज़रत ख़ालिद ने मुज्जाअह से इस शर्त पर सुलह कर ली कि सिर्फ जानें माफ़ कर दी जाएँगी, तुम्हें छोड़ दिया जाएगा, कुछ नहीं कहा जाएगा, क़ैदी नहीं बनाया जाएगा। इस के इलावा हर चीज़ पर मुस्लमान क़ब्ज़ा कर लेंगे।

मुज्जाअह होशियार आदमी था उसने कहा कि मैं क़िला वालों के पास जाता हूँ और उनसे मिलकर मश्वरा कर के आता हूँ। मुसैलमा तो क़त्ल हो चुका था इसलिए ताक़त तो उनकी टूट चुकी थी लेकिन इस की होशयारी फिर इन काफ़िरों के काम आई। मुज्जाअह क़िले में आया तो वहां सिवाए औरतों और बच्चों और बूढ़ों के और कमज़ोरों के और कोई भी नहीं था। उसने यह चाल चली कि औरतों को ज़िरहें पहनाईं और उनसे कहा कि मेरी वापसी तक तुम क़िले की दीवार पर जा कर ऊपर खड़ी हो जाओ ऊपर और जंग का शआर जो है बराबर बुलंद करती रहो। हज़रत ख़ालिद रज़ि के पास आकर उसने कहा कि जिस शर्त पर मैंने तुमसे सुलह की थी क़िला वाले उसे नहीं मानते, अर्थात जानों की आज़ादी और बाक़ी सब माल मुस्लमानों का। और उनमें से कुछ अपने इनकार के इज़हार के लिए दीवारों पर आ गए हैं और मैं इन की ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता, वे मेरे क़ाबू से बाहर हैं। हज़रत ख़ालिद ने क़िलों की तरफ़ देखा तो वहां देखा कि वह सिपाहीयों से भरे हुए थे, औरतों ने वे लिबास पहने हुए थे उस की चाल की वजह से वहां खड़ी थीं। इस शदीद लड़ाई मैं ख़ुद मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचा था, लड़ाई बहुत लम्बी हो गई थी मुस्लमान चाहते थे कि फ़तह हासिल कर के जल्दी वापस चले जाएं अत: हज़रत

ख़ालिद ने मुज्जाअह से इस शर्त पर सुलह कर ली कि सारा सोना चांदी मवेशी और आधे लौंडी तथा ग़ुलाम हज़रत ख़ालिद रज़ि के क़ब्ज़ा में दे दिए जाऐंगे और एक कथन के अनुसार चौथाई क़ैदियों पर सुलह कर ली।

इस जंग में मुस्लमानों की तरफ से मदीना के मुहाजरीन तथा अन्सार में से तीन सौ साठ और मदीना के इलावा तीन सौ मुहाजिरीन शहीद हुए जबकि बनू हनीफा में से अक्रबा के मैदान में सात हज़ार और बाग़ में सात हज़ार और फ़रार होने वालों का पीछा करते हुए भी सात हज़ार कुफ़्फ़ार को क़त्ल किया गया। जब यह लश्कर मदीना वापस पहुंचा तो हज़रत उमर रज़ि ने अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि से फ़रमाया कि तू ज़ैद से पहले क्यों ना शहीद हुआ। ज़ैद रज़ि शहीद हो गया जबकि तू अभी भी ज़िन्दा है ,क्यों ना तुम ने मुझ से अपना चेहरा छिपा लिया। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि ने अर्ज़ किया कि हज़रत ज़ैद रज़ि ने अल्लाह तआला से शहादत मांगी और अल्लाह ने उन्हें वह अता कर दी और मैंने उस की कोशिश की कि मेरी तरफ़ भी लाई जाए मगर मुझे वह हासिल ना हो सकी। बहरहाल इसी साल जंग यमामा में सहाबा किराम की बहुत अधिक शहादतों के बाद हज़रत अबू बकर रज़ि ने क़ुरआन के जमा करने का हुक्म दिया ताकि कहीं क़ुरआन करीम नष्ट ना हो जाए। इस को जमा किया गया। यह यमामा की घटना का विस्तार था।

(उद्धिरत अलकामिल फित्तरीख़ भाग 2 पृष्ठ 218 से 223 सन 11 हिजरी,ज़िक्र मुसैलमा व अहल यमामा,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2006 ई)(उद्धिरत तारीख़ अत्तिबरी भाग 3 पृष्ठ 300-310बाब ज़िक्र बक़ीया ख़बर मुसैलमा अलकज़्ज़ाब व कौमहो मिन अहल यमामा,दारुल फ़िक्र बेरूत 2002 ई)(उद्धिरत तारीख़ इब्न ख़ुलदून अनुवादक अल्लामा हकीम अहमद हुसैन ईलाहाबादी, भाग 3 हिस्सा 1 पृष्ठ 231दारुल इशाअत कराची 2003 ई)

अब अगले जिन सहाबी का ज़िक्र होगा उनका नाम है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह रज़ि। उनका नाम अब्दुल्लाह बिन मख़रमह था और कुनिय्यत अबू मुहम्मद थी। उनका सम्बन्ध क़बीला बनू आमिर बिन लुवय्या से था। उन्हें अब्दुल्लाह अकबर भी कहा जाता था। यह आरम्भ में इस्लाम लाने वाले सहाबा में से थे। उनके पिता का नाम मख़रमह बिन अब्दुल उज़्ज़ा और माता का नाम बहनाना बिन्त सफ़वान था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह की औलाद में एक बेटे मसाहक का ज़िक्र मिलता है जो उनकी बीवी ज़ैनब बिन्त सुराक़ा से थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह आरम्भ में इस्लाम लाने वालों में शामिल थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह को दो हिजरतें करने की सआदत नसीब हुई, एक हब्शा की तरफ़ और दूसरी मदीना की तरफ़। इब्न इसहाक़ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह का ज़िक्र इन सहाबा में किया है जिन्हों ने हज़रत जाफ़र रज़ि के साथ हब्शा की तरफ़ हिजरत की। यूनुस बिन बुकेर, सलमा और बुकाई ने इब्न इसहाक़ का यह कथन बयान किया है जिसमें उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह की हब्शा की तरफ़ हिजरत का ज़िक्र किया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह जब मदीना हिजरत कर के पहुंचे तो उन्होंने हज़रत कुलसूम बिन हिदम रज़ि के घर क़ियाम किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह का भाईचारा हज़रत फरवा बिन अमर अनसारी रज़ि से करवाया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह जंग बदर और बाद की बाक़ी अन्य जंगों में शामिल हुए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह जब जंग बदर में शामिल हुए तो उस वक़्त उनकी उम्र तीस साल थी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में जब यह जंग यमामा में शहीद हुए तो उस वक़्त उनकी उम्र 41 साल थी

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 308-309 ''अब्दुल्लाह बिन मख़रमह' व मिन बनी आमिर बिन लूई,दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ी)(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 377- 378 ''अब्दुल्लाह बिन मख़रमह' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह का जज़बा शहादत बहुत अधिक हद तक बढ़ा हुआ था। अत: वह अल्लाह तआला से दुआ किया करते थे कि मुझे उस वक़्त तक वफ़ात ना देना जब तक मैं अपने जिस्म के हर जोड़ पर ख़ुदा की राह में लगा ज़ख़्म ना देख लूं। अत: जंग यमामा के रोज़ उनके जोड़ों पर ज़ख़्म पहुंचे जिनकी वजह से यह शहीद हो गए

(अल-असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाब: ले इब्न हिज्र असकलानी भाग 4 पृष्ठ 193 अब्दुल्लाह बिन मख़रमह,दारुल फ़िक्र बेरूत 2001 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह बहुत ज़्यादा इबादत करने वाले थे। जवानी में भी बड़ी इबादत किया करते थे। हज़रत इब्न उम्र वर्णन करते हैं कि जंग यमामा के साल में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह और हज़रत अबू हुज़ैफ़ह रज़ि के आज़ाद किए ग़ुलाम हज़रत सालमा रज़ि एक साथ थे। हम तीनों बारी बारी बकरियां चराया करते थे। लश्कर के लिए कुछ माल भी था, उस की हिफ़ाज़त करनी होती थी। अत: जिस दिन लड़ाई शुरू हुई वह दिन मेरा बकरियां चराने का था। अत: मैं बकरियां चरा कर आया तो मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मख़रमह को मैदान जंग में ज़ख़्मी हालत में गिरा हुआ पाया तो मैं उनके पास ठहर गया। उन्होंने कहा हे अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि क्या रोज़ादार ने इफ़तारी कर ली है? शाम का वक़्त हो गया था, मैंने कहा हाँ। तो उन्होंने कहा कि इस ढाल में कुछ पानी दे दो कि मैं इस से इफ़तार कर लूं। वह जंग में भी रोज़े की हालत में थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि कहते हैं कि मैं पानी लेने चला गया मगर जब मैं वापस आया तो वह वफ़ात पा चुके थे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 377''अब्दुल्लाह बिन मख़रमह' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लुबनान 2008 ई (उद्धिरत सैरुस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 570 हज़रत अब्दुल्लाह मख़रमह रज़ि प्रकाशन दार इशाअत कराची)

हज़रत अमरो बिन मअबद अगले सहाबी हैं जिनका अब मैं ज़िक्र करूँगा। हज़रत अमरो बिन मअबद का नाम उमैर बिन मुअबद भी बयान किया जाता है। उनके पिता का नाम मुअबद बिन उज़अर था। हज़रत अमरो बिन मअबद का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला औस की शाख़ बनू ज़ुबैआ से था

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 465 बाब अल-अनसार व मन मअहुम , दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत अमरो बिन मअबद जंग बदर, उहद, ख़ंदक़ सहित अन्य जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। हज़रत अमरो बिन मअबद जंग हुनैन के दिन इन सौ बहादुरी के साथ डट कर मुक़ाबला करने वाले सहाबा में से थे जिनके रिज़्क़ का कफ़ील अल्लाह तआला हो गया था।(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 353 उमीर बिन मअबद' दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2012 ई)जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ खड़े रहे। एक रिवायत में यह बयान है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि कहते हैं कि जंग हुनैन के दिन हमारी सूरत यह थी कि मुस्लमानों की दो जमाअतें पीठ फेरे हुए थीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सौ आदमी भी नहीं थे। (सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबुल जिहाद बाब मा जआअ फिस्सिबाते इन्दल कत्ल हदीस 1689)

जंग हुनैन के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साबित-क़दम रहने वाले सहाबा की संख्या के बारे में विभिन्न राय हैं। उनके अनुसार ऐसे सहाबा की संख्या 80 और 100 के बीच थी।

(सबलुल हुदा वर्रिशाद भाग 5 पृष्ठ 484 ज़िक्र मन सब्त मा रसूलुल्लाह यौम हुनैन, दार अहया अत्तुरास काहिरा,1992 ई)

कुछ कहते हैं सौ थी, बहरहाल यह संख्या में बहुत थोड़े थे।

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र उस वक़्त करूँगा उनका नाम है हज़रत नौमान बिन मालिक रज़ि। हज़रत नौमान बिन मालिक रज़ि का नाम नौमान बिन कोकिल भी ब्यान किया जाता है। इमाम बुख़ारी ने उनका नाम इब्न कोकिल वर्णन किया है। अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी जो एक आलिम थे वह बुख़ारी की शरह में लिखते हैं कि इब्न कोकिल का पीरा नाम नौमान बिन मालिक बिन सालबा बिन इसरम था और सअलबा या इसरम का लक़ब कोकिल था और नौमान अपने दादा की तरफ़ मंसूब होते थे इसलिए उन्हें नौमान बिन कोकिल कहा जाता था।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल जिहाद वस्सैर बाब अल काफ़िर यकतुलुल मुसलिम हदीस 2827)(उम्दतुल कारी भाग 14 पृष्ठ 182-183 किताबुल जिहाद वास्सैर दार अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत 2003 ई)

हज़रत नौमान बिन मालिक रज़ि की चाल में ज़रा लंगड़ा पन पाया जाता था।

(मारफ़तुस्सहाबा ले अबी नईम भाग 4 पृष्ठ 317 बाब अन्नून, 2850अन्नुअमान बिन कोकिल अल-अन्सारी, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई)

हज़रत नौमान बन मालिक रज़ि के पिता का नाम मालिक बन सालबा और माता का नाम अमरह बिन्त ज़याद था और वह हज़रत मुजज़्ज़र बिन ज़ियाद की बहन थीं। हज़रत नौमान रज़ि का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू ग़नम से था। यह क़बीला कोकिल के नाम से मशहूर था। इब्न हश्शाम के नज़दीक हज़रत नौमान बन मालिक रज़ि नौमान कोकिल के नाम से भी मशहूर थे और इब्न हश्शाम ने उनका क़बीला बनू दअद वर्णन किया है। कोकिल क्यों कहलाते थे पिछली बार भी एक ख़ुत्बा में ब्यान कर चुका हूँ कि जब मदीना में किसी सरदार के पास कोई आदमी पनाह का चाहने वाला होता तो उसे यह कहा जाता था कि इस पहाड़ पर

जैसे मर्ज़ी चढ़। अर्थात अब तू अमन में है, जिस तरह मर्ज़ी रह और तू इस हालत में लौट जा कि तो आराम महसूस कर, कोई तंगी नहीं अब तुझे और किसी चीज़ का ख़ौफ़ ना खा और वे लोग जो पनाह देने वाले थे वे कवाकिला के नाम से मशहूर थे। तारीख़ लिखने वाले इब्न हश्शाम यह कहते हैं कि ऐसे सरदार जब किसी को पनाह देते तो उसे एक तीर देकर कहते उस तीर को लेकर अब जहां मर्ज़ी जा। हज़रत नौमान रज़ि के दादा सालबा बिन दअद को कोकिल कहा जाता था। पनाह देने वालों में से थे। इसी तरह ख़ज़रज के सरदार ग़नम बिन औफ़ को भी कोकिल कहा जाता था। इसी तरह हज़रत उबादा बिन सामित भी कोकिल के लक़ब से मशहूर थे। बनू सालिम, बनू ग़नम और बनू औफ़ बिन ख़ज़रज को भी कोकिला कहा जाता था। बनू औफ़ के सरदार हज़रत उबादा बिन सामित थे।

हज़रत नौमान बन मालिक रज़ि जंग बदर और उहद में शरीक हुए और जंग उहद में शहीद हुए। उन्हें सफ़वान बिन उमय्या ने शहीद किया था। एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत नौमान बन मालिक रज़ि को अबान बिन सईद ने शहीद किया था। हज़रत नौमान बिन मालिक रज़ि हज़रत मुजज़्ज़र बिन ज़याद और हज़रत उबादा बिन हिस्हास को जंग उहद के मौक़ा पर एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 414 अन्नुमान बिन मालिक", दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2012 ई)(असदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 158-159 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई) (अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हश्शाम 560 पृष्ठ ज़िक्र मन इसतुशहेद बेउहेदा मिनल मुहाजेरीन पृष्ठ 468 अल-अन्सार व मन मअहुम , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)(उम्दतुल कारी भाग 14 पृष्ठ 182 प्रकाशन दार अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत 2003 ई)

हज़रत नौमान बन मालिक रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग उहद के लिए निकलते और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अब्दुल्लाह बिन उबैय बिन सलूल से मश्वरा के वक़्त अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह अल्लाह की कसम मैं जन्नत में ज़रूर दाख़िल हूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह कैसे ? तो हज़रत नौमान रज़ि ने निवेदन किया इस वजह से कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और मैं लड़ाई से हरगिज़ ना भागूंगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम ने सच कहा। अत: वह इसी रोज़ शहीद हो गए।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग पृष्ठ 322''अन्नुमान बिन मालिक अल-ख़ज़रजी''दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

ख़ालिद बिन अबू मालिक जअदी रिवायत करते हैं कि मैंने अपने पिता की किताब में यह रिवायत पाई कि हज़रत नौमान बन कोकिल अनसारी रज़ि ने दुआ की थी कि मुझे तेरी क़सम हे मेरे रब्ब अभी सूरज पस्त नहीं होगा कि मैं अपने लंगड़े पन के साथ जन्नत की हरयाली में चल रहा हूँगा। अत: वह इसी रोज़ शहीद हो गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने इस की दुआ क़बूल कर ली क्योंकि मैंने उसे देखा, यह कश्फ़ी रूप में अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताया आप ने फ़रमाया कि मैंने उस को देखा कि वह जन्नत में चल रहा था और इस में किसी किस्म का लंगड़ापन या लड़खड़ाहट नहीं थी।

(मअरफ़तुस्सहाब: ले अबी नईम भाग 4 पृष्ठ 317 अन्नुमान बिन कोकिल अल-अन्सारी, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैबर में थे जबकि सहाबा उसे फ़तह कर चुके थे। मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल! मुझे भी हिस्सा दें। सईद बिन आस के एक बेटे ने कहा कि हे रसूलुल्लाह उसे हिस्सा ना दें। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि ने कहा कि यह नौमान बिन कोकिल का क़ातिल है। इब्न सईद बिन आस ने कहा कि इस पर ताज्जुब है हम पर अकड़ता है। अभी ज़ा पहाड़ी, जो तिहामा के इलाक़ा में है और हज़रत अबू हुरैरह के क़बीला दौस के पहाड़ों में से एक पहाड़ है कहते हैं इस की चोटी पर से बकरियां चराता हमारे पास आ गया है और मुझ पर ऐब लगाता है कि मैंने एक मुस्लमान मर्द को क़त्ल कर दिया था। फिर वह कहने लगा कि जिसको अल्लाह ने मेरे हाथ से इज़्ज़त दी और मुझे उस के हाथों रुस्वा नहीं किया। बड़ा होशयारी से बयान दिया। सुफ़ियान कहते थे कि मैं नहीं जानता कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको हिस्सा दिया या नहीं।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल जिहाद वस्सैर हदीस 2827)(मुअज्जमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 223)

हज़रत जाबिर रज़ि से रिवायत है कि हज़रत नौमान बिन कोकिल रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और उन्होंने पूछा हे रसूलुल्लाह अगर मैं फ़र्ज़ नमाज़ें अदा करूँ और रमज़ान के रोज़े रखों और हराम चीज़ों को हराम क़रार दूं और हलाल चीज़ों को हलाल क़रार दूं और इस पर कुछ भी ज़्यादा ना करूँ तो क्या मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँगा? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हाँ। इस पर उन्होंने कहा कि ख़ुदा क़सम! मैं इस पर कुछ भी ज़्यादा ना करूँगा।

(मसनद अहमद बिन हंबल भाग 23 पृष्ठ 78 मस्नद जाबिर बिन अब्दुल्लाह , मूअसस अल-रिसाला 2008 ई)

हज़रत जाबिर रज़ि से रिवायत है कि नौमान बन कोकिल रज़ि मस्जिद में दाख़िल हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुम्अ: के रोज़ ख़ुत्बा इरशाद फ़र्मा रहे थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा हे नौमान दो रकअतें अदा करो। यह जुम्अ: की जो सुन्नतें हैं उनका भी मसला इस में बयान किया गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुत्बा इरशाद फ़र्मा रहे थे ,आप ने उन्हें कहा कि दो रकअतें अदा करो और उन में कम करने से काम लो। सारांश तौर पर जुम्अ: की सुन्नतें पहले पढ़ लो । ख़ुत्बा शुरू हो गया है दो रकअत अदा करो और छोटी पढ़ो। फिर आप ने फ़रमाया कि अगर तुम में से कोई आए और इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो उसे चाहिए कि वह दो रकअत नमाज़ पढ़े और वे दोनों रकातें हल्की हों।

(मअरफ़तुस्सहाब: ले अबी नईम भाग 4 पृष्ठ 317 अन्नुमान बिन कोकिल अल अन्सारी, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

फिर जिन सहाबी का इस वक़्त ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत ख़ुबैब बिन अदी अन्सारी रज़ि। हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि अन्सार के क़बीला औस के ख़ानदान बनू जहजबी बिन औफ से सम्बन्ध रखते थे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 1 पृष्ठ 681 "ख़ुबैब बिन अदी" दारुल फ़िक्र 2003 ई)

हज़रत उमैर बिन अबू वकास रज़ि ने जब मक्का से मदीना हिजरत की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके और हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि के बीच भाईचारा क़ायम फ़रमाया

(उयूनुल असर भाग 1 पृष्ठ 232 ज़िक्र अलमुवाख़ात, दारुल क़लम बेरूत, 1993 ई)

हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि जंग बदर में शरीक हुए और उन्होंने इस जंग में हारिस बिन आमिर को क़त्ल किया था। जंग बदर में मुजाहदीन के सामानों की निगरानी उनके सपुर्द थी।

(सैरुस्सहाब: भाग 3 हिस्सा 4 पृष्ठ 309 इदारा इस्लामीया लाहौर)

हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि चार हिजरी में रजीइ की घटना में शामिल थे। हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि और हज़रत ज़ैद बिन दसिन: रज़ि को मुशरिकीन ने क़ैद कर लिया और उन्हें मक्का साथ ले गए और मक्का पहुंच कर इन दोनों सहाबा को बेट

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दिया गया। हारिस बिन आमिर के बेटों ने हज़रत ख़ुबैब को ख़रीदा ताकि वे अपने बाप हारिस के क़त्ल का बदला ले सकें जिसे बदर के दिन ख़ुबैब क़त्ल किया था। इब्न इसहाक़ के अनुसार हुजैर बिन अबू इहाब तमीमी ने हज़रत ख़ुबैब को ख़रीदा था जो हारिस की औलाद का हलीफ़ था। इस से हारिस के बेटे उक़बा ने हज़रत ख़ुबैब को ख़रीदा था ताकि अपने बाप के क़त्ल का बदला ले सके। यह भी कहा गया है कि उक़बा बिन हारिस ने हज़रत ख़ुबैब बनू नज्जार से ख़रीदा था। यह भी कहा गया है कि अबू इहाब, अकरमह रज़ि बिन अबुजहल, अख़नस बिन शुरैक, उबैदा बिन हकीम, उमय्या बिन अबू उत्ब: हज़रमी के बेटों ने और सफ़वान बिन उमय्या ने मिलकर हज़रत ख़ुबैब को ख़रीदा था। ये सब वे लोग थे जिन के बाप दादा जंग बदर में क़त्ल किए गए थे। इन सब ने हज़रत ख़ुबैब को ख़रीद कर उक़बा बिन हारिस को दे दिया था जिसने उन्हें अपने घर में क़ैद कर लिया था।

(अल-इस्तीयाब फ़ी मअरफ़तुल असहाब भाग 2 पृष्ठ 23से 25'' ख़ुबैब बिन अदी'' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई) (सीरत ख़ातमुल अंबिया पृष्ठ 513)

बुख़ारी में रजीई की घटना के बारे में कुछ विस्तार से यूं वर्णन हुई है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दस आदमियों का एक दस्ता हालात मालूम करने के लिए भेजा और आसिम बिन साबित अन्सारी रज़ि को जो आसिम बिन उम्र बिन ख़िताब के नाना थे उस का अमीर निर्धारित किया। ये लोग चले गए। जब हदअ स्थान पर पहुंचे जो उसफान और मक्का के मध्य है तो उनके बारे में किसी ने बनू लहयान को ख़बर कर दी जो हुज़ैल कबीला का एक हिस्सा है। यह ख़बर सुनकर बनू लहब के लगभघ दो सौ आदमी जो सब के सब तीर-अंदाज़ थे निकल खड़े हुए और उनके क़दमों के निशानों पर उनके पीछे पीछे गए। यहां तक कि उन्होंने वह जगह देख ली, वहां तक पहुंच गए जहां उन्होंने खजूरें खाई थीं। जहां ये दस आदमी रुके थे और खजूरें खाई थीं जो मदीने से बतौर रास्ता के सामान के ले के आए थे, सफ़र के खाने पीने का सामान ले के आए थे, तो वहां बैठ कर उन्होंने खजूरें खाई थीं। वहां ख़जूरों की गुठलियां फैंकीं तो उन्हें देखकर उन्होंने कहा कि ये यसरिब की खजूरें हैं, मदीने की खजूरें हैं और फिर वे क़दमों के निशान पर उनके पीछे पीछे चले गए

जब आसिम और उनके साथियों ने उनको आते देखा तो उन्होंने एक टीले पर पनाह ले ली। इन लोगों ने उनको घेर लिया और उनसे कहने लगे कि नीचे उतर आओ और तुम अपने आपको हमारे सपुर्द कर दो और हमारी तरफ़ से तुम्हारे लिए यह वादा है कि हम तुम में से किसी को भी क़त्ल नहीं करेंगे। आसिम बिन साबित जो इस दस्ता के अमीर थे बोले कि यक़ीनन अगर मैं अपने आपको सपुर्द करूँगा तो आज काफ़िर की अमान पर टीले से उतरना होगा और मैं काफ़िर की अमान पर टीले से नहीं उत्तरूंगा। फिर उन्होंने दुआ की कि हे अल्लाह अपने नबी को हमारे बारे में ख़बर कर दे। इन लोगों ने इस पर तीर चलाए और आसिम को सात आदमियों सहित मार डाला। ये देखकर तीन आदमी वादा पर भरोसा करते हुए, उनकी बातों पर भरोसा करते हुए उनके पास नीचे आ गए। उनमें ख़ुबैब अन्सारी और इब्न दसेनह और एक और आदमी थे। जब ये नीचे आ गए तो काफ़िरों ने उनको क़ाबू कर लिया। उन्होंने अपनी कमानों की तंदियाँ खोलीं और उनकी मुशकें कसीम, इस से उनको बांध दिया। तीसरा आदमी कहने लगा कि यह पहला धोखा है। अल्लाह की कसम मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। मेरे लिए उन लोगों में राहत बख़श नमूना है जो शहीद हुए। मैं तो यहीं हूँ। शहीद करना है तो करो। उन्होंने उसे खींचा और कशमकश की कि वह किसी तरह उनके साथ जाए मगर वह ना माने। आख़िर उन्होंने उनको मार डाला और ख़ुबैब और इब्न दसेनह को पकड़ कर ले गए और जा कर मक्का में उनको बेच दिया। यह जंग बदर के बाद की घटना है और ख़ुबैब को बनू हारिस बिन आमिर बिन नौफ़ल बिन अब्द मुनाफ़ ने ख़रीद लिया और ख़ुबैब ही थे जिन्हों ने हारिस बिन आमिर को बदर के दिन क़त्ल किया था। ख़ुबैब उनके पास रहे।

इब्न शहाब कहते थे कि अबैदुल्लाह बिन ईआज़ ने मुझे बताया कि हारिस की बेटी ने उनसे ज़िक्र किया कि जब उन्होंने सहमति कर ली कि उन्हें मार डालेंगे। जिन्हों ने उनको ख़रीद कर क़ैदी बनाया था वे इस बात पर सहमत हो गए कि अब उनको क़त्ल कर देना है, शहीद कर देना है तो ख़ुबैब ने इसी क़ैद के दौरान में एक दिन उनसे उस्तुरा मांगा कि उसे इस्तिमाल करें। यह बड़ी मशहूर घटना वर्णन की जाती है। अत: उसने उस्तुरा दे दिया। हारिस की बेटी कहती है कि इस वक़्त मेरी बे-ख़बरी की हालत में मेरा एक बच्चा ख़ुबैब के पास आया और उन्होंने इस को ले लिया। उसने कहा कि मैंने ख़ुबैब को देखा कि वह बच्चे को अपनी रान पर बिठाए हुए है और उस्तुरा उनके हाथ में है। मैं ये देखकर इतना घबराई कि ख़ुबैब ने घबराहट को मेरे चेहरे से पहचान लिया और बोले तुम डरती हो कि मैं इसे मार डालूँगा। मैं तो ऐसा नहीं हूँ कि यह करूँ। हारिस की बेटी कहा करती थी कि बख़ुदा मैंने कभी ऐसा क़ैदी नहीं देखा जो ख़ुबैब से बेहतर हो। फिर कहने लगी कि अल्लाह की क़सम मैंने एक दिन उनको देखा कि अंगूर का एक गुच्छा उनके हाथ में था, अंगूरों का एक गुच्छा उनके हाथ में था और वह इस से अंगूर खा रहे थे और वह ज़ंजीर में जकड़े हुए थे और इन दिनों मक्का में कोई फल भी ना था। कहती थीं कि यह अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ था जो उसने ख़ुबैब को दिया। जब उन लोगों को हरम से बाहर ले गए कि ऐसी जगह क़त्ल करें जो हरम नहीं है तो ख़ुबैब ने उनसे कहा मुझे इजाज़त दो कि मैं दो रकअतें नमाज़ पढ़ लूं और उन्होंने उनको इजाज़त दे दी तो उन्होंने दो रकअतें पढ़ीं और कहने लगे मुझे यह गुमान ना होता कि तुम यह ख़्याल करोगे कि मैं इस वक़्त जिस हालत में नमाज़ में हूँ घबराहट का नतीजा है , मुझे कोई मरने की घबराहट है तो मैं ज़रूर यह नमाज़ लंबी पढ़ता। फिर उन्होंने अपने ख़ुदा से दुआ करते हुए यह कहा कि हे अल्लाह उनको एक एक कर के हलाक कर। जब उनको शहीद करने लगे उस वक़्त उन्होंने यह भी दुआ की कि हे अल्लाह उनको एक एक कर के हलाक कर। फिर हज़रत ख़ुबैब ने यह शेअर भी पढ़े कि

عَلٰی اَیِّ شِقٍّ کَانَ لِلّٰہِ مَصْرَعِیْ وَلَسْتُ اُبَالِیْ حِیْنَ اُقْتَلُ مُسْلِمًا
یُبَارِکْ عَلٰی اَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعٍ وَذَالِکَ فِیْ ذَاتِ الْاِلٰہِ وَاِنْ یَّشَأْ

कि जबकि में मुस्लमान होने की हालत में मारा जा रहा हूँ मुझे परवाह नहीं कि किस करवट अल्लाह के लिए गिरूँगा और मेरा यह गिरना अल्लाह की ज़ात के लिए है और अगर वह चाहे तो टुकड़े किए हुए जिस्म के जोड़ों को बरकत दे सकता है

अल्लामा हिज्र असकलानी जो बुख़ारी के शारह हैं वह जंग रजीई के अधीन एक हदीस की व्याख्या में लिखते हैं कि हज़रत ख़ुबैब ने शहादत के वक़्त यह दुआ मांगी कि اَللّٰھُمَّ اَحْصِھِمْ عَدَدًا कि हे अल्लाह इन दुश्मनों की गिनती को शुमार कर रख। ये जो मेरे दुश्मन हैं उनको गिनती कर ले ताकि उनसे बदला ले सके और एक दूसरी रिवायत में यह शब्द अधिक हैं कि وَاقْتُلْھُمْ بَدَدًا وَلَا تُبْقِ مِنْھُمْ اَحَدًا और उन्हें चुन-चुन कर क़त्ल कर और उनमें से किसी एक को भी बाक़ी ना छोड़।

(बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब हल यस्तासर अलर्जल? हदीस 3045)(फ़तहुल बारी शरह सही अल-बुख़ारी इबन हिज्र असकलानी भाग 7 पृष्ठ 488 क़दीमी कुतुब ख़ाना मुक़ाबिल आराम बाग़ कराची)

बहरहाल उन्होंने नफ़ल पढ़े और आख़िर हारिस के बेटे अक़बा ने हज़रत ख़ुबैब बिन अदी रज़ि को वहां जा के फिर ख़ुबैब क़त्ल कर दिया, शहीद कर दिया और एक और रिवायत बुख़ारी में है इस के अनुसार हज़रत ख़ुबैब को अबू सरवअ ने क़त्ल किया था और यह ख़ुबैब ही थे जिन्हों ने हर ऐसे मुस्लमान के लिए दो रकअत पढ़ने की सुन्नत क़ायम की जो इस तरह बांध कर मारा जाए।

अल्लाह ने आसिम बिन साबित रज़ि की दुआ जिस दिन वह शहीद हुए वह क़बूल फ़रमाई और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को बताया जो पहले ज़िक्र हो चुका है आसिम बिन साबित रज़ि ने दुआ की थी कि अल्लाह

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अत: हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

तआला नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर कर दे जो इस क़ाफ़िला के लीडर थे जिन में हज़रत ख़ुबैब भी शामिल थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ि को बताया कि जो उन लोगों के साथ घटना हुई है और जो उन्हें तकलीफ़ पहुंची थी और जब कुफ़्फ़ार क़ुरैश को कुछ लोगों ने बताया कि आसिम रज़ि क़त्ल किए गए हैं तो उन्होंने आसिम रज़ि की तरफ़ कुछ आदमियों को भेजा कि उनकी लाश में से ऐसा हिस्सा लाएं कि जिस से वह पहचाने जाएं। आसिम रज़ि ने बदर के दिन उनके बड़े बड़े लोगों में से एक आदमी को क़त्ल किया था तो आसिम रज़ि की लाश पर भिड़ों का एक झुण्ड भेजा गया। अल्लाह तआला ने ऐसा इंतिज़ाम किया जो साएबान की तरह उस के ऊपर छाया रहा और उनकी लाश को कुफ़्फ़ार के भेजे हुए आदमी कुछ नुक़्सान ना पहुंचा सके और उनसे बचा लिया, वह कोई टुकड़ा ना काट सके।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़वा अर्रजीई हदीस 4086-4087)

हज़रत ख़ुबैब जब शहीद किया जाने लगा था तो उस वक़्त उन्होंने यह भी दुआ मांगी कि हे अल्लाह मेरे पास कोई माध्यम नहीं कि तेरे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक सलाम पहुंचा सकूं अत: तू ख़ुद मेरी तरफ़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम पहुंचा दे। जब हज़रत ख़ुबैब क़त्ल किए जाने के लिए तख़्ता पर चढ़े तो फिर दुआ की। कहते हैं कि एक मुशरिक ने जब यह दुआ सुनी कि اَللّٰهُمَّ أَحْصِهِمْ عَدَدًا وَاقْتُلْهُمْ بَدَدًا कि अर्थात हे अल्लाह उनकी गिनती को शुमार कर रख और उनको चुन-चुन कर क़त्ल कर तो वह ख़ौफ़ से ज़मीन पर लेट गया। कहते हैं कि अभी एक साल नहीं गुज़रा था कि सिवाए उस आदमी के जो ज़मीन पर लेट गया था हज़रत ख़ुबैब के क़त्ल में शरीक अन्य लोग ज़िन्दा ना रहे, सब ख़त्म हो गए। हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़यान रज़ि बयान करते हैं कि मैं अपने पिता के साथ इस अवसर पर मौजूद था। जब मेरे पिता ने हज़रत ख़ुबैब की दुआ सुनी तो वह मुझे ज़मीन पर गिराने लगे। और भी कुछ लोग होंगे बहरहाल पहली रिवायत है, एक दूसरी रिवायत यह भी है। अरवा ब्यान करते हैं मुशरिकीन में से जो इस अवसर पर मौजूद थे उन में अबू इहाब, अख़नस बिन शुरैक़, उबैदह बिन हकीम और उमय्या बिन उत्बा शामिल थे। वह यह भी बयान करते हैं कि जिब्राईल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस घटना की ख़बर दी जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ि को बताया। सहाबा रज़ि कहते हैं कि इस दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठे हुए थे और आप ने फ़रमाया, मज्लिस लगी हुई थी बैठे हुए थे आप ने फ़रमाया وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا خُبَيْبُ कि हे ख़ुबैब तुझ पर ख़ुदा की सलामती हो और क़ुरैश ने उन्हें क़त्ल कर दिया है।

(फ़तहुल बारी शरह सही अल-बुख़ारी लिल इमाम इब्न असकलानी भाग 7 पृष्ठ 488 क़दीमी कुतुब ख़ाना मुक़ाबिल आराम बाग़ हदीस नम्बर 4086)

आप ने यह भी फ़रमाया। तो अल्लाह तआला ने सलाम पहुंचाने का इंतिज़ाम कर दिया। यह शरह सही बुख़ारी की है इस में यह लिखा है

हज़रत ख़ुबैब को जब शहीद कर दिया गया तो मुशरिकीन ने उनका चेहरा क़िब्ला के इलावा दूसरी तरफ़ कर दिया लेकिन इन मुशरिकीन ने हज़रत ख़ुबैब का चेहरा थोड़ी देर बाद दोबारा देखा तो वह क़िब्ला रुख था। वे लोग बार-बार हज़रत ख़ुबैब के मुँह को दूसरी तरफ़ फेरते थे लेकिन इस में कामयाब ना हो सके अत: मुशरिकीन ने उन्हें इसी हाल पर छोड़ दिया।

(अलअसाब फ़ी तमीज़िस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 227'' ख़ुबैब बिन अदी'' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई)

एक और रिवायत में यह भी है कि क़ुरैश ने ख़ुबैब को एक दरख़्त की शाख़ा से लटका दिया और फिर भालों की चूकें दे देकर क़त्ल किया। इस भीड़ में एक आदमी सईद बिन आमिर भी शरीक था। यह आदमी बाद में मुसलमान हो गया और हज़रत उमर रज़ि के ज़माना ख़िलाफ़त तक उस का यह हाल था कि जब कभी उसे ख़ुबैब की घटना याद आती था तो उस पर बेहोशी छा जाती थी ज़ुल्म करने वालों में यह शामिल था बाद में मुसलमान हो गया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन ,पृष्ठ 515 से 516)

उनके हवाले से कुछ घटनाएं और भी हैं। अब यह बाद में ब्यान होंगे

इस वक़्त एक तो मैं यह ऐलान करना चाहता हूँ कि तारीख़ अहमदियत विभाग जो है उन्होंने अपनी एक वेबसाइट शुरू की है और उर्दू और अंग्रेज़ी दोनों ज़बानों पर आधारित है जिसमें तारीख़ अहमदियत और सीरत तथा सवानिह से बारे में जमाअती जो छपी हुई सामग्री है वह दी जा रही है जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, ख़ुलफ़ाए अहमदियत, अस्हाबे अहमद, शुहदाए अहमदियत, दरवेशाँने कादियान,मुबल्लग़ीन सिलसिला और अन्य सिलसिला के बुज़र्गान की सीरत तथा सवानिह से बारे में किताबें हैं, मक़ाले हैं, मज़ामीन हैं, यादगार तस्वीरें हैं, तारीख अहमदियत की जितनी जिल्दें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं वे अन्य जिल्दें, जैली तन्ज़ीमों, देशों और शहरों की जमाअत की तारीखें हैं, बुज़ुर्गान सिलसिला की क़लमी तहरीरे हैं, कुछ तबर्रुकात की तस्वीरें हैं, अख़बारों और रसालों के अहम और प्रमुख हवाले हैं। तहक़ीक़ी और तारीख़ी मज़ामीन दिए गए हैं, अहम जमाअत के आयोजनों और जमाअत की इमारतों जैसे मस्जिदों और मिशन हाऊसज़, मर्कज़ी इदारों, तालीमी इदारों, हस्पताल, डिस्पेंसरीज़, गेस्ट हाऊसज़ इत्यादि की तस्वीर हैं उनका यथा सम्भव परिचय दिया गया है। यूट्यूब के एक वीडियो चैनल के द्वारा एम टी ए की कुछ नादिर डाकोमेंटरीज़ इत्यादि भी दी गई हैं। इस वेबसाइट में जमाअत अहमदिया के आरम्भ से अब तक के अहम तारीख़ी घटनाएं time line भी दी जा रही है। तो इंशा अल्लाह जुम्अ: के बाद में इस वेबसाइट को लॉन्च भी कर दूँगा।

दूसरी एक अफ़सोस वाली ख़बर है कि हमारा पुराने मिशनरी सफ़ीउर्रहमान ख़ुरशीद साहिब जो अफ़्रीक़ा में भी और जगहों पर भी मुबल्लिग़ रहे हैं और फिर नुसरत आर्ट प्रैस के मैनेजर थे। इब्न हकीम हफ़ीज़ुर्रहमान सनौरी साहिब16 सितंबर को 75 साल की उम्र में हार्ट-अटैक की वजह से वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह व इन्ना लिल्लाह राजेऊन। उनका मैं जनाज़ा ग़ायब अभी पढ़ाऊंगा।

आप हज़रत मौलवी क़ुदरतुल्लाह सनौरी साहीब रज़ि सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नवासे थे। सफ़ीउर्रहमान न ख़ुरशीद साहिब के पिता भी वाकिफ ज़िन्दगी थे और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की हिदायत पर सिंध की ज़मीनों पर उन्होंने ख़िदमात अंजाम दें। सफ़ीउर्रहमान साहिब की आरंम्भिक तालीम रब्वह में थी। फिर उनकी माता ने एक ख़्वाब देखी जिसके आधार पर 1961 ई में यह जामिआ अहमदिया रब्वह में दाख़िल हुए और1970 ई में शाहिद की डिग्री हासिल की। उनकी दो बीवियां थीं। पहली बीवी से उनकी एक बेटी और दूसरी बीवी से कोई औलाद नहीं है। उनकी बेटी भी यहीं रहती हैं, रोशन आरा ,जमील अहमद साहिब की पत्नी हैं। जामिया पास करने के बाद सफ़ीउर्रहमान साहिब कुछ समय रब्वह में मर्कज़ी दफ़तरों में रहे। इस के बाद चकवाल में मुरब्बी रहे और वहां एक साल तक सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत हकीम अब्दुल्लाह साहिब के साथ मिलकर उन्होंने ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई।

1972 ई में उनको सेरियलोन भेज दिया गया और कहते हैं कि अफ़्रीक़ा रवानगी के वक़्त हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रगमहुल्लाह ने यह हिदायत फ़रमाई कि अफ़्रीकन से मुहब्बत करते रहना और कहते हैं कि इस नसीहत को मैंने गंठ बाँध ली। फिर एक बार उन्होंने ख़ुदा तआला की नुसरत की अपनी एक घटना वर्णन की। कहते हैं कि सेरियलोन में दूर दराज़ के इलाक़े में लंबा पैदल और किश्ती पर सफ़र कर के शाम के वक़्त एक आबादी में पहुंचे और एक बूढ़े अफ़्रीकन अहमदी भी उनके साथ थे। वहां पहुंचे तो गांव का चीफ़ वहां मौजूद नहीं था अत: उनके जो नियम हैं, रवायते हैं उस के अनुसार चीफ़ इमाम के पास गए। चीफ़ इमाम ने बात

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

सुनने से इनकार कर दिया और गांव से निकाल दिया। रात हो रही थी, कोई ठिकाना नहीं था। वापस चल पड़े। थोड़ी दूर गांव से जंगल का इलाक़ा शुरू हो जाता था और वहां ऐसा इलाक़ा था जहां समुंद्र की या दरिया की, पानी की लहरें भी आ जाया करती थीं। कहते हैं हम चल रहे थे, बड़े परेशान थे तो ऐसे वक़्त में एक तरफ़ से एक आदमी ने आवाज़ दी जो ऊंची जगह पर बैठा हुआ था और फिर उसने हमें अपने झोंपड़े में पनाह दे दी। कुछ देर के बाद फिर कुछ आवाज़ें आना शुरू हुईं, लोग बुला रहे थे हमें और क़रीब आए तो पता लगा कि कह रहे थे कि चीफ़ इमाम ने तुम्हें वापस बुलाया है क्योंकि जब से उसने तुम्हें निकाला है तुम्हारे जाते ही उस के सिर में बहुत अधिक दर्द शुरू हो गई है। इस पर उसने कहा है कि बुला के लाओ शायद उनकी वजह से मेरे सिर में दर्द है। बहरहाल यह वापस गए, उसने सारे गांव वालों को जमा किया और कहते हैं वहां रात को हम ने तब्लीग़ की। दस बारह लोगों ने अहमदियत क़बूल कर ली और कहते हैं चीफ़ इमाम की सिरदर्द के लिए हमने सूरह फ़ातिहा का दम किया तो वह भी अल्लाह के फ़ज़ल से ठीक हो गया और इस तरह अल्लाह ताला ने ख़ुद उनकी रिहायश का भी इंतिज़ाम कर दिया और ना सिर्फ यह बल्कि बैअतें भी अता दें।

वहां उनको सेरालियोन में प्रिंटिंग प्रैस जारी करने का शुरू करने का भी मौक़ा मिला। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने वहां ख़ास मशीनें भिजवाएं जो वहां लगाई गईं। उस ज़माना में पहले वहां प्रैस कामयाब नहीं हो रहे थे। बहरहाल उन्होंने इस को बड़ी कामयाबी से चलाया और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह इस प्रैस की वजह से उनकी काफ़ी तारीफ़ किया करते थे। फिर उस के बाद उनका तक़र्रुर नाईजीरिया में हो गया। वहां भी उन्होंने जमाअत का प्रैस जारी किया और बड़ी कामयाबी से चलाया बल्कि इस दौरान में एक दुर्घटना भी पेश आई कि काम करते करते प्रैस की मशीन में आ कर इन की एक उंगली कट गई, और बड़ा ईलाज कराया लेकिन ठीक नहीं होती थी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे को जब पता लगा तो आप ने उनको कहा कि लंदन आकर ईलाज करवाओ और फिर अल्लाह के फ़ज़ल से यह ठीक भी हो गई। फिर रकीम प्रैस जब यहां क़ायम होना था। यह यहां थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ने फ़रमाया कि तुम यहां पर प्रैस लगाने की कोशिश करो और जो कमेटी बनाई गई इस में मुस्तफ़ा साबित साहिब और मुबारक साक़ी साहिब भी शामिल थे। इस में उनको भी शामिल किया और फिर यहां उस वक़्त से प्रैस भी अल्लाह के फ़ज़ल से चल रहा है।

17 साल उनको अफ़्रीक़ा के देशों में सेरालियोन और नाईजीरिया में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर 1988 ई में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ने दौर अफ़्रीक़ा के दौरान उनको फ़रमाया कि कैमरोन जाओ, वहां जमाअत शुरू करो। अत: बड़ी मुश्किलों से उनको वीज़ा मिला। यह वहां गए और एक माह तक कैमरोन में रहे और वहां तब्लीग़ के अवसर भी पैदा हो गए। रेडियो पर आपके इंटरव्यू प्रकाशित हुए और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दौरे के दौरान एक ख़ानदान ने बैअत की तौफ़ीक़ भी पाई।1988 ई में यह वापस पाकिस्तान आ गए। फिर लाहौर में बतौर मुरब्बी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। यहां भी विभिन्न अवसर पर जलसा पर आया करते थे। प्राईवेट सैक्रेटरी के दफ़्तर में ख़िदमत करते रहे विभिन्न। 1991 ई से नुसरत आर्ट प्रैस के मैनेजर के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। फिर कुछ समय से स्ट्रोक (stroke)की वजह से बीमार थे तो उन्होंने रिटायरमैंट भी ले ली।

अल्लाह तआला उनसे रहम और मग़फ़िरत का व्यवहार फ़रमाए दर्जात बुलंद करे और उनकी एक बेटी है इस को भी सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए, पत्नी को भी सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए।

☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: तर्बीयती issue जो भी आपके सामने आते हैं, जो भी जमाअत के बारे में ख़ास तर्बीयती issues हूँ वह अपनी रिपोर्टस में जो मर्कज़ को भिजवाते हैं। इस में अलग से ज़िक्र क्या करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मैंने ज़ैली तन्ज़ीमों के द्वारा जर्मनी से जायज़ा लिया था उस का फ़ायदा हो जाता है। यह ज़रूरी है। बहुत सी बातें और समस्याएं मेरे सामने आ गई थी। एक सवालनामा बना कर उन्होंने जायज़ा लिया था। बिना किसी के नाम के बहुत से issues सामने आए थे। इस इन्फ़ार्मेशन की वजह से मेरे जलसा की तीन तक़रीर हो गई थीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो नाम नहीं बताना चाहता ना बताए लेकिन जो कोई भी तर्बीयती issue है वह अपनी रिपोर्ट में लिख कर भिजवा दें।

हुज़ूर अनवर ने सदरों की तरफ़ से सहयोग के बारे में पूछा। एक मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि सदरों की तरफ़ से सहयोग की कमी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप को यहां तर्बीयत के लिए लगाया गया है, तर्बीयत करना आपका काम है। आपने हिक्मत के साथ समझाते रहना है। चिड़ना नहीं है और ना चिढ़ के जवाब देना है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मुरब्बियों का सहयोग ओहदेदारों के साथ होना चाहिए। ओहदेदारों का मसला सहयोग के बारे में हर जगह है। मैं पहले भी बता चुका हूँ कि मुझे अब्दुल मालिक ख़ान साहिब मरहूम ने बताया था कि वह कराची में मुरब्बी थे और अब्दुल्लाह ख़ान साहिब कराची के अमीर थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने एक अवसर पर कहा कि जिस तरह मालिक ख़ान साहिब और अब्दुल्लाह ख़ान साहब आपस में सहयोग से काम करते हैं,इसी तरह बाक़ी मुरब्बी क्यों नहीं कर सकते।

नमाज़ जमा करने के बारे में एक मुरब्बी साहिब ने निवेदन किया कि यहां किसी दोस्त ने कहा था कि लंदन में नमाज़ जमा होती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि दस माह से अधिक तो हम पाँच नमाज़ें अलग अलग ही अदा करते हैं। लगभग डेढ़ माह का समय गर्मियों में नमाज़ मग़रिब तथा इशा और सर्दीयों में नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा होती है क्योंकि इन दोनों नमाज़ों का मध्य समय बहुत कम हो जाता है। हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि जिस दोस्त ने यह बात की थी उसे समझा देना था।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: तहरीक जदीद की क़वाइद की किताब में मुबल्लग़ीन के फ़राइज़ और ज़िम्मेदारियों पर आधारित क़ाइदे हैं, 23 प्वाईंटस हैं, क्या यह सब ने पढ़े हैं? आप सबको चाहिए कि अपने यह फ़राइज़ पढ़ें और उनके अनुसार काम करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अपनी ज़िन्दगियों को इस्लामी शिक्षा के अनुसार ढालें और सारी जमाअत को तब्लीग़ करने के लिए मुतहर्रिक करें। फिर तर्बीयत करना आपकी ज़िम्मेदारी है। सेक्रेटरी तर्बीयत प्रोग्राम बनाता है, सेक्रेटरी तब्लीग़ प्रोग्राम बनाता है, दाईन इल्लाह की तर्बीयत तो आपने करनी है, दीनी इल्म तो आपके पास है, उन के पास तो नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: सुबह उठो और तय्यार हो और आठ, साढ़े आठ बजे तक तय्यार हो कर अपने दफ़्तर आओ और काम करो, अपनी डाक देखो और फिर तब्लीग़ के लिए निकल जाओ। प्रोग्राम पहले से बना हो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तब्लीग़ के लिए विभिन्न नए नए तरीक़े निकालो। नई राहें तलाश करनी पड़ती हैं। जो मुबल्लग़ीन ऐसा करते हैं वे कामयाब होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैंने घाना में देखा है कि जो काम करने वाले मुबल्लग़ीन थे वे तब्लीग़ के लिए कोई ना कोई रास्ता निकाल लेते थे। सड़क के किनारे, रास्तों पर पमफ़्लेटस लेकर खड़े हो जाते थे। तक़सीम करते थे, इस तरह सम्पर्क होते थे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: कामयाबी पहले दिन तो नहीं मिलती। इसको प्राप्त करने के लिए कोशिश करनी पड़ती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आज से सात आठ साल पहले कहा था कि हर साल दस प्रतिशत आबादी तक जमाअत का परिचय पहुंचाएं। लेकिन अमरीका में अब तक एक प्रतिशत भी जमाअत का परिचय नहीं हुआ होगा।

billboard लगा दिया या walk या पुर अमन पमफ़लट तक़सीम कर दिया, उस का अगला क़दम भी तो होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया motivate करने के लिए मुरब्बियों ने ही काम

करना है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मुबल्लिग़ तब्लीग़ी कमेटी का मैंबर है। आपने जो पमफ़ैलट तय्यार करना है, इस के लिए पहले डिस्कस करें कि लोग किस चीज़ से प्रभावित होते हैं। जिस क्षेत्र में तक़सीम होना है वहां का जायज़ा लें और फिर इलाक़ा की ज़रूरत के अनुसार पमफ़लट तय्यार करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अपने सम्पर्क बढ़ाऐं, सोशल मीडिया के द्वारा कुछ अपने प्रोग्राम कर रहे हैं। तब्लीग़ कर रहे हैं। बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं, सब को करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या नौ मुबाईन की तर्बीयत के बारे में आपको जमाअत की तरफ़ से प्रोग्राम मिलता है। इस पर मुबल्लिग़ इंचार्ज ने निवेदन किया कि हम ने प्रत्येक को पाँच ऐसे नौ मुबाईन को क़रीब लाने का टार्गेट दिया हुआ है जो दूर हो गए हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि जो दूर नहीं हुए उनको क़रीब लाने के लिए स्थायी सम्पर्क रखें। उनको ना छोड़ें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पाकिस्तानी अपनी मज्लिस लगा लेते हैं,इस तरह दूसरे दूर हो जाते हैं। यह तरीक़ ग़लत है। इस तरफ़ ध्यान देना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मुरब्बियों का काम है कि वे क़ुरआन करीम पढ़ाऐं, क्लासें लिया करें और अगर आपका अपना तलफ़्फ़ुज़ ठीक नहीं है तो ठीक करें और फिर दूसरों को सिखाएँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अब पाकिस्तान से भी online कक्षाएं शुरू हो चुकी हैं। लेकिन आपको भी नियमित क़ुरआन करीम की कक्षाएं लेनी चाहिऐं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अपनी जमाअत की इस्लाही कमेटी में लोकल मिशनरी शामिल है। इस्लाही कमेटी का काम है कि मसला के सामने आने से पहले उस का हल तलाश किया जाए।

एक मुबल्लिग़ की तरफ़ से यह बात पेश हुई कि एक लड़की ने शादी करने की इच्छा को प्रकट किया लेकिन इस के माता पिता पढ़ाई के लिए नसीहत कर रहे थे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर ऐसा केस आपके सामने आए तो इस को इस कमेटी में हल करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने फ़रमाया था कि अगर लड़कियों को शिक्षा दिलवा कर उन से नौकरियां करवानी हैं, कमाई करवानी है और इस वजह से उन की शादी जल्दी ना हो तो मैं ऐसी शिक्षा के ख़िलाफ़ हूँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जमाअत के मेम्बरों को इकट्ठा करना आप का काम है। लोगों को ओहदेदारों से शिकायतें होती हैं। ओहदेदारों को भी समझाएँ और लोगों को भी समझाएँ कि आपने ओहदेदारों की बैअत नहीं की हुई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की है। जिनके झगड़े लड़ाईयां हैं, घरों में जा कर उनको समझाएँ। लेकिन किसी भी घर से जब तक सुलह नहीं हो जाती कुछ खाना पीना नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: तर्बीयत के लिए एक तरफ वसीयत की तरफ़ ध्यान दिलाना भी है। इस के लिए सेक्रेटरी वसाया की मदद करें। वसीयत में शामिल होने से लोगों की तर्बीयत और क़ुर्बानी का स्तर बेहतर होता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मुबल्लग़ीन को कुछे बढ़ाने में, चन्दा का स्तर बढ़ाने और शरह के अनुसार चन्दा अदा करने के बारे में से सीकरेट्रियों की मदद करनी चाहिए। यह बुनियादी तर्बीयत का काम है और मुबल्लग़ीन के फ़राइज़ में है कि लोग सही शरह के साथ चन्दा अदा करने लग जाएं। सीधा दख़ल अंदाज़ी नहीं करनी लेकिन चन्दे बढ़ाने में मदद करनी है।

एक मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि अगर live ख़ुत्बा जुम्अ: फ़ज्र के वक़्त प्रसारित हो रहा हो तो क्या-किया जाए। अमरीका में कुछ क्षेत्र ऐसे हैं कि जब ख़ुत्बा जुम्अ: live आ रहा होता है तो फ़ज्र का वक़्त होता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जो फ़ज्र का वक़्त है वह तो वही है और निर्धारित वक़्त है। इसलिए वक़्त पर नमाज़ फ़ज्र अदा हो। ख़ुत्बा आप बाद में सुनें या जो MTA ने दोबारा प्रसारित करने के लिए तीन घंटे का transmission delay रखा है। इस वक़्त सुन लें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अगर जलसा का प्रोग्राम हो या कोई दूसरा ऐसा प्रोग्राम हो कि ख़लीफ़ा वक़्त का ख़िताब live आ रहा हो तो आप अपने हालात के अनुसार नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र या मग़रिब तथा इशा जमा कर सकते हैं। ख़िताब सुनने से पहले या बाद में वक़्त की तुलना से जमा की जा सकती हैं। लेकिन नमाज़ फ़ज्र की मजबूरी है इस का एक निर्धारित वक़्त है, जिसमें देरी नहीं की जा सकती।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: फ़ज्र की नमाज़ के बारे में से जिसने भी यह सवाल किया है यह तो पूछने वाला सवाल ही नहीं। एक मुबल्लिग़ को पता होना चाहिए कि नमाज़ के समय क्या हैं।

शादियों पर नामुनासिब हरकतें, नापसंदीदा बातें होने के बारे में से एक मुबल्लिग़ ने सवाल किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप ख़ुत्बे सुनते हैं, मैंने सब बताया हुआ है। अगर शादी पर कोई ग़ैर इस्लामी रस्में, बातें देखें तो ध्यान दिलाएँ और बंद करवाऐं। इस्लामी रिवायतों और शिक्षाओं के अनुसार शादियां होनी चाहिऐं। ध्यान दिलाने पर अगर फिर भी इस्लाह नहीं करते तो फिर उठ कर आ जाया करें। वहां नहीं बैठना। अगर बैठे रहेंगे तो फिर आपको भी सज़ा होगी।

हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया गया कि कुछ ग़ैर अहमदी लोगों हम से अपना निकाह पढ़वाना चाहते हैं ताकि उनका इस्लामी तर्ज़ पर भी निकाह हो जाए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यह जायज़ा ले लें कि क्या यहां निकाह पढ़ना वाले रजिस्टर्ड होते हैं। अगर आप रजिस्टर्ड हैं तो निकाह पढ़ा सकते हैं। एक मुबल्लिग़ को फ़रमाया कि पहले पता करके बताएं कि आपकी स्टेट का क़ानून किया है? जो भी क़ानून है इसके अनुसार चलना है।

एक मुबल्लिग़ ने सवाल किया कि अगर कोई शादी की उद्देशय से बैअत करे तो क्या-किया जाए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। दिलों का हाल तो सिर्फ ख़ुदा तआला जानता है। उन्होंने शादी तो बहरहाल करनी है और इजाज़त के बिना करेंगे तो इख़राज हो जाएगा तो इस तरह कम से कम वह किसी बुराई से बच जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हमारा एक निज़ाम है। अगर कोई लड़का बैअत करता है तो जमाअत के नियमों की दृष्टि से उसे एक साल का समय गुज़ारना पड़ता है और अगर एक साल के समय से पहले शादी करनी है और किसी वजह से जल्दी करनी है तो मैं इजाज़त दे देता हूँ ताकि गंद से बचें। दूसरा यह कि शायद जमाअत के क़रीब आ जाऐं। वर्ना जिसने शादी करनी है वह तो कोर्ट में जा कर भी कर लेती हैं तो फिर इख़राज की सज़ा होती है। तो उन चीज़ों से बचाने के लिए में कम समय में भी इजाज़त दे देता हूँ ताकि इस्लाह हो जाएगी।

जिसने पीछे हटना है वह बदक़िस्मत है, वह पीछे हट जाता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: नई बैअत करने वाले अहमदी को जब बैअत किए हुए साल पूर्ण हो जाएगी तो फिर अमीर मुल्क या सदर इजाज़त देता है। अगर साल से कम समय है और शादी करनी है तो ख़लीफ़ा वक़्त से इजाज़त लेना ज़रूरी है।

एक मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि हमारी मस्जिद में कुछ ग़ैर अहमदी बतौर मदद ज़कात लेने के लिए आते हैं तो क्या हम उनको ज़कात की रक़म में से कुछ दे सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ज़कात की मद तो आपके अपने हाथ में नहीं है। इस में से आप अपने आप ख़ुद तो नहीं दे सकते। आप उन्हें बता दें कि ज़कात इत्यादि की रक़म तो हम दे नहीं सकते। हमारा इख़तियार नहीं है। आप अपने पास सदके इत्यादि और स्थानीय फ़ंड रखें, इस में से बतौर मदद जो देना है, दे दिया करें।

बैअत फ़ार्म के बारे एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर आपको तसल्ली नहीं है तो इस को अपने मर्कज़ भिजवा दें। साथ ख़त लगा कर कि इस को फ़िलहाल ध्यान रखें और अभी pending रखें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यूरोप में जो असाईलम सीकरज़ बैअत करते हैं हम उनको कह देते हैं कि बैअत क़बूल उस वक़्त होगी जब केस पास हो जाएगा। उनसे हम चन्दा भी नहीं लेते। उनका केस pending रखते हैं।

एक मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि कुछ लोगों लाटरी का काम करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि लाटरी मशीन जो है। जो यह काम करते हैं, ओहदेदार नहीं बन सकते। अगर वे ओहदेदार हैं तो बताएं। केवल कारकुन के तौर पर काम लेने में कोई हर्ज नहीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जो सूअर और शराब का काम करने वाले हैं, उन के बारे में हिदायत है कि उनसे चन्दा नहीं लेना। मजबूरी की अवस्था उन के लिए है। जमाअत के लिए मजबूरी की अवस्था नहीं है। इसलिए जमाअत

उनसे चन्दा नहीं लेगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: कुछ लोग बतौर मुलाज़िम काम करते हैं तो वह दूसरा काम तलाश करें। ऐसे लोगों को दो तीन महीने तो मोहलत दी जा सकती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अगर शराब स्टोर में है और वहां काम करने वाले इस में सीधा शामिल नहीं हैं, जैसे grocery store में केशर है तो कोई हर्ज नहीं। लेकिन अगर वह सीधा अपने हाथ से बेचता है तो फिर वह शामिल है और शामिल है। हाँ अगर वह ऐसे टल (till) पर है कि वहां शराब बिकती नहीं होती तो फिर ठीक है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: बहरहाल जो शामिल हैं ऐसे लोगों से चन्दा नहीं लेना, उनको कोई ओहदा नहीं देना, कारकुन के तौर पर तो काम कर सकते हैं ताकि सम्बन्ध स्थापित रहे। अगर कोई आम कारकुन के तौर पर काम कर रहा है तो ठीक है। ऐसा शख़्स किसी विभाग की नुमाइंदगी नहीं कर सकता।

एक मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि अगर हम मग़रिब की नमाज़ देरी से पढ़ें और इस के बाद दर्स हो फिर उस के बाद इशा की नमाज़ हो ताकि जमाअत का मैंबर्ज़ के लिए आसानी हो। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत यही थी कि पहले वक़्त पर नमाज़ पढ़ी जाए। अगर नीयत नेक है तो फिर ठीक है देरी के साथ दूसरे वक़्त में पढ़ ली जाए। यह देखना ज़रूरी है कि इशा के वक़्त में ना चली जाए।

हुज़ूर अनवर ने एक सवाल पर मख़रिज के बारे में हिदायत देते हुए फ़रमाया कि नमाज़ पढ़ने आता है तो ठीक है बेशक आए। लेकिन इस से कोई जमाअत का काम कारकुन के तौर पर भी नहीं लेना। हमने उस को अहमदियत से नहीं निकाला, बल्कि निज़ाम से निकाला है। निज़ाम में जो सिस्टम है इस में इस को involve नहीं करना।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मुरब्बी का काम है कि इस की तर्बीयत करे। इसको समझाए ताकि वह निज़ाम जमाअत का हिस्सा बने। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो भी सज़ा पाने वाला मुझे ख़त लिखता है मैं उसे सीधा जवाब नहीं देता। जब निज़ाम जमाअत की तरफ़ से रिपोर्ट आ जाए और माफ़ी हो जाएगी तो फिर ठीक है। जमाअत का निज़ाम के वक़ार को भी स्थापित रखना है और इस की इस्लाह भी करनी है।

एक मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि एक जमाअत की संख्या बहुत ज़्यादा है जैसे आठ सौ से अधिक है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अगर तर्बीयती लिहाज़ से आपको परेशानी आ रही हैं तो आप अमीर साहिब को लिखें तो दो जमाअतें बना दें।

आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: सारांक्ष यह है कि आप मुबल्लग़ीन ने अपनी जमाअत के सामने रोल मॉडल बनना है, इबादतें हैं, नमाज़ें हैं, अख़लाक़ हैं, बातचीत है, धार्मिक इल्म है, जनरल नॉलिज है, देशी लिहाज़ से भी मामलों का इल्म होना चाहिए। कुछ जगहों पर आप लोग जमाअत की नुमाइंदगी में जाते हैं तो देश की हालतों का इल्म होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जमाअत के हर मैंबर में यह एहसास हो कि आप किसी की तरफ़दारी करने वाले नहीं। जब ख़ानदानों की आपस में रंजिशें देखें तो उनको समझाएँ। लेकिन किसी के घर चाय की प्याली नहीं पीनी जब तक कि उनकी सुलह नहीं होती।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जो भी बातें मैंने की हैं सबको उनके नोटिस लेने चाहिऐं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप सब यह भी आदत डालें कि जो ख़ुत्बा जुम्अ: सुनते हैं तो उस के भी साथ साथ नोटिस लें और फिर बाद में उनके प्वाईंटस बनाएँ। हमारे वहां यूके में कुछ मुबल्लग़ीन हैं जो ख़ुत्बा के नोटिस लेते हैं और फिर पूरा हफ़्ता वह नोटिस उनके दर्स देने में काम आ जाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया: अल-फ़ज़ल का अध्ययन किया करें। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह अन्हो ने उन लोगों को मुख़ातब होते हुए फ़रमाया था जो अल-फ़ज़ल नहीं पढ़ते कि मैं तो अलफ़ज़ल पढ़ता हूँ। मेरे लिए तो किसी ना किसी मज़मून में कोई बात नई होती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जिन को अलफ़ज़ल अख़बार नहीं आता वह मिशनरी इंचार्ज को बताएं। ऑनलाइन तो आ जाता है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अल-फ़ज़ल पढ़ने से आपकी उर्दू बेहतर होगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की तफ़सीरुल क़ुरआन को नियमित अपने अध्ययन में रखें। इसके अतिरिक्त कम से कम आधा घंटा दैनिक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की कोई ना कोई किताब ज़रूर अध्ययन करनी है।

यू एस ए के मुबल्लग़ीन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मीटिंग आठ बजे ख़त्म हुई। इसके बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब का आयोजन हुआ।

आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित बीस बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय आशिर अहमद, मुस्तफ़ा क़वीमुद्दीन, फ़हद मुबारिज़ भट्टी, जुनैद सिद्दीक़ी, मुस्तफ़ा अहमद, शुऐब असलम चौधरी, असद चौधरी, मुतह्हर अहमद वाहला। प्रिया अतीक़ा मआज़ मिर्ज़ा, आइज़ा महमूद, फ़ातिमा ज़ुहरा, जाज़िबा मिन्शाद, लुबैना मन्सूर अहमद, मशाल वक़ार, रिज़वाना मआज़ मिर्ज़ा, सुबीका अहमद, सय्यदा मलाहत, नाइला अमतुल हई, फ़रह ईमान अहमद, अदीला अमातुल हई।

आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

30 अक्तूबर 2018 दिनांक मंगलवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाईं और हिदायतों से नवाज़ा।

मस्जिद बैयतुर्रहमान से लगभग पच्चास मील के दूरी पर मज्लिस अंसारुल्लाह यू एस ए के अन्तर्गत Japa के क्षेत्र में एक दरिया के किनारे एक हाऊसिंग स्कीम पर काम हो रहा है, जहां सारे घर अहमदी लोगों के होंगे। यहां 48 घरों की बुनियाद का मन्सूबा है और एक कम्यूनिटी सैंटर, मस्जिद भी है।

आज प्रोग्राम के अनुसार इस जगह के विज़ट का प्रोग्राम था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ साढ़े नौ बजे अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और Japa के लिए रवानगी हुई। लगभग एक घंटा के सफ़र के बाद साढ़े दस बजे यहां पधारे।

इस वक़्त यहां 14 घर बुनियाद हो चुके हैं। एक बलॉक में चार घर हैं और दो बलॉक में पाँच पाँच घर हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने इन घरों की बुनियाद का निरीक्षण फ़रमाया और इस हाऊसिंग के मन्सूबा और प्लैनिंग का जायज़ा लिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला दया करते हुए एजाज़ अहमद ख़ान साहिब के घर कुछ देर के लिए तशरीफ़ ले गए। इस के बाद आदरणीय अताउलकरीम चौधरी साहिब रीजनल नाज़िम आला अंसारुल्लाह नॉर्थवेस्ट रीजन के घर का भी हुज़ूर अनवर ने विज़ट फ़रमाया। भूतपूर्व सदर बाल्टीमोर जमाअत डाक्टर अमीन बेग साहिब के घर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ वक़्त के लिए तशरीफ़ ले गए।

इस के बाद आदरणीय अब्दुल रफीक़ जदरान साहिब के घर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला कुछ देर के लिए तशरीफ़ ले गए। रफ़ीक़ जदरान साहिब मज्लिस नुसरत जहां के अन्तर्गत घाना में लगभग 14 साल विभिन्न अहमदिया हाई स्कूल्ज़ के प्रिंसिपल रहे हैं।

इन घरों में एक घर जमाअत यू.ऐस.ए के गेस्ट हाऊस के तौर पर निर्धारित किया गया है। हुज़ूर अनवर ने इस घर का भी निरीक्षण फ़रमाया। यहां पहले बलॉक में एक घर मर्कज़ी गेस्ट हाऊस के तौर पर भी तैयार किया गया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने इस गेस्ट हाऊस का भी तफ़सीली निरीक्षण फ़रमाया और अंदरूनी पार्टीशन के बारे में से कुछ हिदायतें भी दें।

इस के बाद मजलिस अंसारुल्लाह के इन मेम्बरों ने जो उस वक़्त मौजूद थे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ ग्रुप तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद 11:30 बजे यहां से वापसी के लिए रवानगी हुई और 12:30 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैयतुर्रहमान

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 24 October 2019 Issue No. 43

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

लाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

फ़ैमिली मुलाक़ात

आज सुबह के इस सैशन में 62 फ़ैमिलीज़ के 294 लोगों ने और 76 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाक़ात करने का सौभाग्य पाया। इन सभी लोगों और फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को दया करते हुए चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज मुलाक़ात करने वाले लोगों अमरीका की निम्नलिखित जमाअतों से आए थे। वाशिंगटन की विभिन्न जमाअतों और पाकिस्तान से आने वाले लोगों के अतिरिक्त सैंटर्ल वर्जीनिया, नॉर्थ वर्जीनिया, ओशकोश, फ़िलाडेल्फ़िया, रिचमंड, रिसर्च ट्राएंगल, रोचेस्टर, साऊथ वर्जीनिया और तूलसा की जमाअतों से लोगों मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। जो फ़ैमिलीज़ सबसे लंबी दूरी सड़क द्वारा तय करके आईं वह 1200 मील की दूरी लगभग उन्नीस घंटों में तय करके पहुंची थीं।

मुलाक़ात करने वालों के ईमान वर्धक विचार

सय्यद दाऊद अहमद साहिब जिनका सम्बन्ध सेंट्रल वर्जीनिया की जमाअत से है मुलाक़ात का ज़िक्र करते हुए बयान करते हैं कि हुज़ूर अनवर से ज़िन्दगी की पहली मुलाक़ात हमारी ज़िन्दगी का एक सुनहरी लम्हा था। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य नसीब होना मेरी एक पुरानी ख़्वाब की ताबीर थी। यह दिन हमारे लिए बहुत बरकतों वाला दिन है।

एक दोस्त देश फ़ारूक़ मुनीर साहिब मुलाक़ात की हालत बयान करते हुए कहते हैं कि जैसे ही हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर नज़र पड़ी तो इस तरह महसूस हुआ कि हुज़ूर अनवर के बरकतों वाले वजूद से नूर की किरणें फूट रही हैं। मैं आज अपने आपको बहुत ही ख़ुशनसीब समझता हूँ कि आज मुझे मुद्दतों बाद ज़माना के इमाम के, ख़लीफ़ा का दर्शन और मुलाकात का सौभाग्य नसीब हो गया।

अताउल फ़हीम साहिब जो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की मुलाक़ात के लिए अटलांटा जॉर्जिया से बड़ा लंबा सफ़र तय करके आए थे, बयान करते हैं कि जब मैं मुलाक़ात के लिए दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर इतना नूर था कि मैं हुज़ूर अनवर की तरफ ज़्यादा देर तक नहीं देख सका।

आदरणीय उम्र ख़लील साहिब जो जमाअत रिचमंड, वर्जीनिया से मुलाक़ात के लिए आए थे, वर्णन करते हैं कि आज मेरी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी, मैं अपनी ख़ुशी को शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। मैंने हुज़ूर अनवर से अँगूठी की दरख़ास्त की तो हुज़ूर अनवर ने मेरी अँगूठी लेकर उसी को बरकतों वाला करके मुझे वापस लौटा दिया।

आदरणीय अली चौधरी साहिब जो मेरीलैंड में रहते हैं मुलाक़ात के बाद अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहते हैं कि जब हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल होते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे वक़्त रुक गया है और आप एक नई रुहानी दुनिया में दाख़िल हो रहे हैं। ख़िलाफ़त के दरबार की रुहानी रोशनी और नूरानी मनाज़िर वर्णन से बाहर है। हुज़ूर अनवर जमाअत के हर फ़र्द की फ़िक्र रखते हैं और छोटी छोटी बातों पर भी आपकी नज़र होती है। मुलाक़ात के दौरान आक़ा ने मेरे और मेरी पत्नी की नौकरी के बारे में भी पूछा।

दाऊद अहमद साहिब अपनी फ़ैमिली के साथ मुलाक़ात के लिए आए थे, आप बताते हैं कि हम अठारह सालों से अमरीका में मुक़ीम हैं। लेकिन यह हुज़ूर अनवर से हमारी पहली मुलाक़ात थी। हमने हुज़ूर अनवर से दुआ की दरख़ास्त की। उनकी बेटी ने बताया कि हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर नूर ही नूर था। यह मुलाक़ात बहुत ही जादू भरी और ख़ूबसूरत थी। हुज़ूर अनवर हमसे इतने प्यार से मिले कि इस मुलाक़ात और अपने आक़ा की मुहब्बत का नक़्शा हमारे दिलों में हमेशा के लिए नक़्श हो गया है।

मुलाक़ात का यह प्रोग्राम 3:30 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

नेशनल आमिला मजलिस अन्सारुल्लाह यू.एस. ए की सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मीटिंग रुम में तशरीफ़ लाए जहां नेशनल मजलिस आमला अन्सारुल्लाह,यू.एस.ए की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। मीटिंग के आरम्भ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

* इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सबसे पहले क़ायद उमूमी से पूछा कि कुल कितनी मज्लिसे हैं और क्या सब की रिपोर्टस आती हैं और आप मर्कज़ रिपोर्ट भिजवाते हैं? इस पर क़ायद उमूमी ने निवेदन किया कि अमरीका में अन्सारुल्लाह की कुल 73 मज्लिसे हैं जिन्हें 13 रीजनज़ में तक़सीम किया गया है। सारी मज्लिसों की तरफ़ से रिपोर्टस प्राप्त होती हैं। और बाक़ायदगी के साथ हर माह रिपोर्ट मर्कज़ भी भिजवाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ने फ़रमाया: सिर्फ़ रिपोर्टस हासिल करते हैं चाहे काम हुआ हो या ना हुआ हो? इस पर क़ायद उमूमी साहिब ने निवेदन किया कि सारी मज्लिसों में विभिन्न प्रोग्रामों का आयोजन होता है और इस का ज़िक्र मज्लिसों की रिपोर्ट में होता है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तालीमुल क़ुरआन ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के उपदेशों की रोशनी में हमारा लक्ष्य है कि सौ प्रतिशत अन्सारुल्लाह दैनिक क़ुरआन करीम की तिलावत करें। इस वक़्त रिपोर्टस के अनुसार 62 प्रतिशत अन्सार दैनिक क़ुरआन करीम की तिलावत करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने पूछने फ़रमाया कि वक़्फ़ आरज़ी भी आपके विभाग की ज़िम्मेदारी है। कितने अन्सार ने वक़्फ़ आरज़ी की है? इस पर क़ायद साहिब तालीमुल क़ुरआन ने निवेदन किया कि पिछले साल कुल 52 अन्सार ने वक़्फ़ आरज़ी की थी जबकि मौजूदा साल की गिनती इस वक़्त हमारे पास मौजूद नहीं है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फ़रमाया: आप इस तरफ़ भी ध्यान दें और वक़्फ़ आरज़ी करने वालों की संख्या बढ़ाएं। यह भी आपके विभाग की ज़िम्मेदारी है।

* इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने क़ायद तालीम से पूछा कि उनका दौरान साल का शिक्षा के बारे में से किया मन्सूबा है? इस पर क़ायद तालीम ने निवेदन किया कि हम ने इस साल के लिए किश्ती नूह और इस में मज़कूरा कुरानी आयतों को सिलेबस में रखा था। पहले हम ने यह किताब छ: माह के लिए रखी थी लेकिन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के किश्ती नूह के अध्ययन के बारे में से ख़ुत्बा जुम्अ: के बाद इस को छ: महीने की बजाय पूरे साल के लिए रख लिया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तालीम ने निवेदन किया कि इस वक़्त 1542 अन्सार उस का अध्ययन कर चुके हैं जो कि पच्चास प्रतिशत के क़रीब बनता है। इन अन्सार ने नियमित उस का ऑन लाइन इमतिहान दिया है।

* इस के बाद क़ायद तर्बीयत ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर निवेदन किया कि इस साल हमारे दो बड़े लक्ष्य हैं। एक तो यह कि अन्सार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा जुम्अ: सुनें और दूसरा निज़ाम वसीयत में शामिल हों। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप नमाज़ बा-जमाअत के कियाम पर ध्यान क्यों नहीं दे रहे? इस तरफ़ भी ख़ास ध्यान दें।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad